

॥ अथ श्रीसतकेवलपरमगुरुभ्योयुनमः ॥ अथ

॥ अथ श्रीसतकेवलपरमगुरुभ्योयुनमः ॥ अथ

॥ २४ ॥ पुरेससकर्त्रीसरजंन ॥ आदसबनकीसोयीजी

नकेसुधसंकल्पेअपीलकुल ॥ उपजायेहसबको

॥ १ ॥ तीनुअनुकरमकरतकेकारंन ॥ श्रीतस

कलततवेतु ॥ जेहीजमुहयेमाहाद्यअवीगतसे

तेहीजनावुहहेतु ॥ २ ॥ अथमआद्यधंधुकारधुन्यमे

आपअकेलरहा ॥ ३ ॥ माहासुंन्यमेसुन्यसुंन्यगत

उतईतकोहुनथा ॥ ३ ॥ तेहीखुदनकुकोदीकल

मही ॥ हवीतवहेजवीलारव ॥ आपनेआपकेनीज

नरणीतके ॥ उचतहंगसभारव ॥ ४ ॥ हंगसभारव

सोअहंगएकमम ॥ अचीतभयेचीतवांनु ॥ सुर

तसचेतेवेतहोईनीजके ॥ धरीतसुधअभीमांनु

॥ ५ ॥ तेहीसुधअभीमांनअहंगमम ॥ असंखका

लकेसो ॥ आद्यअंतमध्यअजरअजायक ॥ अ

वधकालवीनुमो ॥ ६ ॥ एहीपरकारनआपोआ

पनीज ॥ सावधानहोईसदही ॥ भवीतभावउरतदी

पतापदीग ॥ नदीपपायअहंपदही ॥ ७ ॥ अहंप

दसोआपनोआपनयो ॥ अनुभवकरीतकराले

अहोहयहुंस्वाधसनातन ॥ सुनबनीतक्रतका

ले ॥ ८ ॥ तवतेसुधअभीमांनहंगले ॥ करीतसुध

संकल्पही ॥ अद्वैत एक अनाद्य पुरुशकु ॥ एही वी
 धी उठे कल्पही ॥ १० ॥ कल्प सोई आपने जां नन
 के ॥ बीनई डी अंतसही ॥ साक्षी पणो सकती वि
 जत ॥ कां मन अंतसजसही ॥ १० ॥ बीनई डी अं
 तसके करता ॥ ओर नही गुंन सेतु ॥ तेही वरन
 न अचरत सागर मे ॥ देखु हस जनसहेतु ॥ ११ ॥
 याते अंतस करनई डी गुंन ॥ रही तसदा सांम
 यही ॥ नीजके ज्ञान सुरत से सब कथु ॥ उदीत
 हवी तसां सतही ॥ १२ ॥ सैरत सो सुध अजीत
 अंसकु ॥ पुनीत वी से ससां मां तु ॥ परम वी से
 सपरम पतकी गत ॥ करन काज ईत जां तु ॥ १
 ३ ॥ जेही चतुरानन नीगम चतुरसे ॥ जीनुपो
 कारत नेती ॥ तीतकी भाल करन भव आवत
 परम अंश परमेती ॥ १४ ॥ प्रकृती पुरस गुन बंस
 ज्ञानको ॥ करन काज उपदेशु ॥ जुगन जुगन मे
 धरीत ता यतंन ॥ आवत अंश वी शेशु ॥ १५ ॥ प
 ण पुनी परम अंस अवी गतको ॥ अतु भव अक
 ल अनुपा ॥ त्येती पुरस कु कल्प कल्प मे ॥ जुग
 मि करीत जनुपा ॥ १६ ॥ एही सां मां न वी शेश अंश
 ही ॥ परम वी शेश समेतु ॥ छेवट कता अंसके क
 ही तल ॥ भीन भीन करहेतु ॥ १७ ॥ तीन मे परस

विशेष अग्रही कृताकी नम हेरबानु द्वितीय अंश

॥ अद्वै ॥ वीशेशवीलासीक ॥ त्रीतीये अंससांमांतु ॥ १८ ॥
 परमवीशेषप्रकार उभयेगत ॥ स्रजे अंशकरु
॥ २५ ॥ ऐशु ॥ एक अष्टके कीये पसारन ॥ एक ही रस्ते अ
 र ऐशु ॥ १९ ॥ नही तरणीत सो ईके हे अर ऐसर
 सकरतया सरहाई ॥ तेती कहण को लोप ह
 वीत भव ॥ क्रता पगवत ताई ॥ २५ ॥ ते से ही पण
 अवतार आद्य लो ॥ उभये अंश वीशेशु ॥ एक ज्वा
 ल के रहीत अगन्य पुनी ॥ एक सहीत परमेशु
॥ २१ ॥ ओर कहत सांमांत अंशकी ॥ सुनीयो स
 मनस कीई ॥ उत ममध्यम करनी करनसे ॥
 उंचनी च सब होई ॥ २५ ॥ एही त्रीये वैश अंसकी
 उतपंत ॥ क्रता सुध संकल्पकी ॥ परमपसार भरी
 त सहीत मवीत ॥ केते ही मुदत कल्पकी ॥ २३ ॥
 जेते ही पुरस्यपमाण अइसके ॥ जीमे कल्पजे
 ही जाई ॥ तेते ही मुदत अंस आरबलकी ॥ कछु
 फरक नहीताई ॥ २४ ॥ कीये सकल अनुकरम
 अंशके ॥ सहीत मुदत ईश्वरीये ॥ भीन भीन जी
 लु करीत करं मल ॥ जौनी जते वीस्तरीये ॥ २५ ॥
 तीनमे परम अंश उभये मही ॥ अष्टपसारन जे
 ही ॥ सुनोते हुनकी कहत हकीगत ॥ जेही पर
 कारबने ही ॥ २६ ॥ पुरसे कीये सकीके संजम

तेहीपराअंशवीशेशु॥ करीतवीलोकअन्योअंत
 उपजे॥ बुंलावीशंतमाहेशु॥ २७॥ एहीत्रीयेपुत्रभ
 येभवकारज॥ पुनीहीतीयभवेतु॥ सावंत्रीउम
 यासहीतमलछ॥ एहीखटअंससखेतु॥ २८॥
 तारपीछेकेरीतेहीपुरशने॥ अहंगहवीतअवी
 लांतु॥ नहीनसुजसरजनकीहंमकुं॥ कीनेकी
 येउतपांतु॥ २९॥ तदपीतायउरतीवुरागत्ये
 तनमनकीयेतरासु॥ अहोमोयमुजक्रतान
 पाईत॥ धीकएहीसक्तवीलासु॥ ३०॥ क्रोडके
 पधरआपनेआपपर॥ अतीआक्रांतपुरेशु॥
 माहाअघोरगतभयेभयंकर॥ हवीतक्रांतअ
 कलेशु॥ ३१॥ देखीत्रासेसक्तीगुणसहीतंम॥
 क्यौंकीतपरसउदासी॥ चुकतहीअपनीक्यौंकी
 तमें॥ तोक्यौंतजेहलासी॥ ३२॥ बीनुहलासहा
 सतजहकीगत॥ पुरसेकीयेसक्तकु॥ तुम
 हंमकेकरतारकारनको॥ सोतलहेअवीगत
 कु॥ ३३॥ बीनुअवीगतगतपायवीनातो॥ पती
 बीनकुनपसाई॥ खलकखेलरचनाबाबज
 की॥ कीनकुकीयेवधाई॥ ३४॥ तदपीसक्तीके
 हेकुंनपतीहे॥ आपोआपतमेही॥ जेहीपरज
 हंमसेउतपांनी॥ तुमसेकरीसनेही॥ ३५॥ बी

अहै

२६

होरुकीयेपुरसेपरमानीक॥ जोमेहवीतनी
जलापु॥ तोमेरीमुजकौंनहोयगत्य॥ उपजेको
कलापु॥ ३६॥ तेहीमाटेहंमहीनीजपतनही
सांमथकोहसकरता॥ आपसहीतअसमां
नअरसके॥ जेहीउपजावंतहरता॥ ३७॥ तेही
पतकेआलोचीतअनुभव॥ करीतदेखताज
बही॥ अतीअथाहअपरंमपतदेखीत॥ अमी
तभईतहंसतबही॥ ३८॥ अमीतभावगतहुये
उरंतर॥ कृताखोजनहीपाई॥ तबहीतायतत
भयेउदासीक॥ उत्तरहेहेराई॥ ३९॥ जदपी
चकीतचीनभयेभयंक॥ हवीतवीआंतवी
कलही॥ तेहीतेत्रसीतचंतचीतवंतकरानी
जपतीरहेअकलही॥ ४०॥ अकलरहायनतेअ
पतेखुद॥ मालीकवीनातमोजु॥ कोटीकोटी
कलपेईआपनपरा॥ कोहोकीनुउपजतसीजु
४१॥ वीनुहुसीजीसीरसुसकखांतगत॥ ध
रहीध्यांतकोहकुनके॥ सांमत्तपुरशसजीव
नकेकोई॥ अजीतआपनहीसुनके॥ ४२॥
नीजअनुभवउतमांनकरीतसे॥ कृतासीध
आपनाई॥ सोहीसीधकरतारनकीकीत॥
सोधकरनकुजाई॥ ४३॥ तेहीससुसुसुकीवीन

खंचीत। अहंग होई अकुलाई। तीनके मरमत
 पाईत तुमजीत। सोहं मदे हलखाई ॥ ४४ ॥ तेही
 अकुलाई देखत नत्रासीत। जासीत भये भर
 मही ॥ आगुकी नको पुरस उदासीक। तीनके
 एही मरमही ॥ ४५ ॥ कीन मरमनी जक्रतासी
 धके ॥ जेही उनमान करेह ॥ जबीत हास तुमसे
 तजी कंपीत। एही वीधी खाच परेह ॥ ४६ ॥ जेही
 सोच आपने सरजनको ॥ हवीत वीजोग वी
 खापु। त्राहे त्राहे तीनके तन उपजीत ॥ परम
 म्हाद परीतापु ॥ ४७ ॥ या वी लुदी रघनाही उपरी
 तडुख ॥ खसम वीना उतरतमे ॥ संकट साहाय
 करनको उकी लुकीत। प्रपीत काज जीततीत
 मे ॥ ४८ ॥ एही अमोघ सोगही परेह हंम ॥ अतही प्रो
 ड अ परमही ॥ तदपीताय तुं मत जीत भागु मो
 ई ॥ सकल बहाय करमही ॥ ४९ ॥ अब तुम हंम
 से लागलीत नही ॥ धरही त्यागत नसेती ॥ तु
 मपती हंम जीतु सुखद तुमनकु ॥ हंमपतकी
 कायनेती ॥ ५० ॥ जबते अब मोई परमपती नकी
 भाल करहु भव घांडी ॥ माहा धंधु मे जाईल गाबु
 आसुन अदखराडी ॥ ५१ ॥ सक्ती समीपरही
 एतनी लग ॥ एतेही वचन वदेही ॥ तुरत त्याग

के गये सुनमे ॥ छटकी तसकल सनेही ॥ ५२ ॥
 इती श्रीसक्ती पुरसवी जोगवेरागको अंगसंपु
 र्ण ॥ १ ॥ सक्ती वीजोग परे दुपुरसके ॥ कोडकोष
 कलपाई ॥ बंसावी सनमाहेशथरधरीत ॥ त्री
 यासही ततीनुताई ॥ १ ॥ माहारुदन कलपांतक
 रीतजीनु ॥ जुगनकोटलौं जबही ॥ चौदेई तब
 कलोकवीनुनरवीत ॥ चलीतरोनलगे सबही
 ॥ शीये सुंत्यमाहासुन्यअमीतपुनी ॥ गंभीरा
 सुनसोई ॥ शीयेपंचतत्वके बीजगा ॥ बीनुपस
 रनतनओई ॥ ३ ॥ जौं तरुजडघणलगी तखा
 यजीतवस्यसकलकुमलाई ॥ तौसक्तीजडजी
 नुपसरनतरु ॥ तबकसत्वसुनताई ॥ ४ ॥ योक
 लयंतरहे सबहीईत ॥ पुरसपरमसुनजेह ॥ स
 मदमसुरतसमेटकरीतजीत ॥ उपचीतभ
 येवदेह ॥ ५ ॥ एकनीघेचीतहवीतनीरालंबाव
 तीवेगवीलमाई ॥ सुसमदृष्टप्रवीलोकमल
 खलख ॥ कताएकडरलाई ॥ ६ ॥ परमसुंत्यस
 नातनमेसदा ॥ बेरेहध्यांतधरीनके ॥ त्रीगुणस
 कमगसुपनंतरजीनु ॥ देखुनदृष्टफरीनके
 ॥ ७ ॥ एकाएकसुंत्यसुंत्यसुंतमही ॥ सुधसामा
 धलगाई ॥ नीजकरताकेलसरखनकुं ॥ सुर

तस्यचेतरहाई॥८॥ इति श्री नीरंजन नरवेदध्य
 नको अंगसंपूर्णेश॥ एही परकारं नजुवो पुरसने
 क्रताकाजक्याकी नही॥ आपने नीजअनुभव
 नरणीतसे॥ लीये परमपदची नही॥ १॥ धंमधं
 त्यजीनुकही नजातमोई॥ एही पुरशके त्यागु
 चंचलचपलमनीजमोहनी॥ तजके लीये वेरा
 गु॥ २॥ जीतके तेन कटासअचरचरलोक
 असंखतचावे॥ सत्यावंतहोई सकलपदारथ
 सजीवरंचंचलवावे॥ ३॥ पुनीजाके प्राक्रम
 परमगत्य॥ अकलकलीनवजाई॥ समलस
 कीकलअएउतीआद्यतंन॥ सकतकुणतजता
 ई॥ ४॥ एहीवीधीकीअदभूतअतलीबल॥ जी
 नयेकोवुनरवटाई॥ तेही पुरसने तजीततर
 एतुल॥ बोहोरुतकीतबनाई॥ ५॥ नीजपती
 क्रताकाजकीयेकेईवीधी॥ श्रोतासुनोअकर
 ही॥ तीनुआगे एहीभवके भेखसब॥ कुनताय
 सरभरही॥ ६॥ जयेतीजयेतीजगआद्यपुरश
 की॥ परमपुरसईतकेही॥ तेहीपरंतुनाहीन
 कोउपत॥ तीतकेभयेसनेही॥ ७॥ करीतसनेह
 सनातनपतसे॥ अवीगतअकलआराधु॥ आ
 पअकेलअनाद्यअरसमे॥ वेवेहअचलअगाधु

॥ अर्धे ॥

॥ २८ ॥

८ ॥ अब इतके गुंन सक्ती सहीतकी ॥ कहत ह
वीत जे ही जीनकी ॥ रोतर हे जे ही पती वीष् रन
से ॥ जुगत कोट गये तीनकी ॥ ९ ॥ अती रुदन
कलपांत देवीत व ॥ भई बाण ससमानी ॥ त्रीगु
ण पुत्र लेई रचो स्रष्टक ॥ छोडो रुदन सहान्ती ॥
१० ॥ तब त्ये छोडो रुदन सक्तीने सुनी अर सक्ती
बान्ती ॥ बोहो रुरखे सुत आपने कु ॥ कीने भेद
भवानी ॥ ११ ॥ पुत्री तीन दीन ही पुत्र नकु ॥ जीन
के करो संजोई ॥ मेरे हुकंम करतुर्म करतु ॥ सां
मत दोसन कोई ॥ १२ ॥ जब तीनु देवतीनु तरा
यतसे ॥ कीये संजोग सनेही ॥ संसेर हीत हवी
त जीतके चीत ॥ मात बचन सुन लेही ॥ १३ ॥ अ
रध बचन मानीत संकरने ॥ तार सहीतर हे
जोगी ॥ सारा बचन वीरंची वीला सीक ॥ बीन
हुया गभये भोगी ॥ १४ ॥ वी सुवीचार कीन ही
कलमत ज ॥ पीता कुन कीत गयेह ॥ तजी मोह
तम हुये स्वांतीगत ॥ जीनके धरी संदेह ॥ १५ ॥
एही परकारंन भये त्रीगुण क्रत ॥ जीनमे वीसे
ई वीरंची ॥ तीनके सुत सुनकादी कसर जीत
रहीत सकल परपंची ॥ १६ ॥ तीनु उरधरेन बो
धसक्तीके ॥ बचन वीडार गयेह ॥ पीतुपीतन

की पुत्रपलाईत ॥ तरणवेशतनरहेवु ॥ १७ ॥ बोहो
 रुबरजनलगीसकतव ॥ सुनकादीकउचरे
 हु ॥ पीतामाततजकेतुजकेपत ॥ कुनकारन
 कीतगयेहु ॥ १८ ॥ जदपीसक्कीसंकोचकरी
 तचीता ॥ एहीनमांनेसीखमेरी ॥ दीमचसुके
 सुभटसचेतन ॥ जीनकीगतीअनेरी ॥ १९
 तदीपसक्कीसुनकादीककुजबजातनरखे
 रहाई ॥ अहीधंन्यसुतकेसुततुमकु ॥ दोहक
 रलेहुबलाई ॥ २० ॥ जेहीकरताकारनमेरेपत
 गयेसबनकुषाडी ॥ तीनकीरवोजकरनतुम
 हीसुत ॥ जावनलगेपछाडी ॥ २१ ॥ नाहीनभये
 तुमसेनीजकेसुत ॥ पीतापुत्रजायनसे ॥ तद
 पीधंन्यतुमभयेचतुरसुत ॥ रवोजीतमोहीखा
 वंतसे ॥ २२ ॥ देहीआसीसपुत्रकेसुतकु ॥ सक्की
 समोहतजीने ॥ रहेअचलकहीकालभैसके
 नीजकरतारभजीने ॥ २३ ॥ नीजकरतारसक
 लकेकारंत ॥ सुनोसुनकबडभागी ॥ जेहीका
 रनतुमेरेपीतुकेपीत ॥ तजीतमोयगयेभागी
 २४ ॥ तिहीकारनकीभहीतमनकु ॥ आरतरवोज
 करनकी ॥ वारंमवारलेहुवारणीया ॥ तुमगती
 अपरपरनकी ॥ २५ ॥ एहीपरकारसक्कीसन

अधे

॥ २६ ॥

मानित ॥ करीत जान दीये सुतही ॥ माहावी कट
वीतराग धरीत गये ॥ सुनकादी कअद भूतही
२६ ॥ इती श्रीनरवेदचंतामणी सक्तप्रज्ञा सुन
कवीतरागको नाम त्रतीयो अंगः ॥ ३ ॥ ॥ देयो
एही नीजती वृत्त्यागके ॥ केही वीधी जोगलयेहुं
तेही परकारनके उतईतमे ॥ आभव कुन भये
हु ॥ १ ॥ नीज अनुभवके एही वैरागु ॥ पुरस आद्य
सुनकनके ॥ वेदपुरांन शास्त्रनही उतदीन
सुनीत ज्ञानको उकुनके ॥ २ ॥ आपही आपक
रीत अवीलोकन ॥ गुरुवीचार अगमसे ॥ पुर
स आद्य सुतके सुत लही गत ॥ बीतुगमज्ञान
नीगमसे ॥ ३ ॥ तदीपताय वैराग त्यागकु ॥ नी
गंमशास्त्रकीतकांसु ॥ तेही वचन संसारीनके
सुन ॥ पावही त्यागवीरांमु ॥ ४ ॥ जदीपवीरंची
आद्यनारके ॥ संधी वचन वदेही ॥ तेहीन आव
तकांस त्यागके ॥ जीन कुहोणा वदेही ॥ ५ ॥ ते
हीमाटेजेही प्रथंम त्यागकु ॥ अही वचन कुत
जही ॥ पीछे इंडी करणनी घेकर ॥ जीगजुगत
सेसजही ॥ ६ ॥ तदीपतायजेही गस्त आचार
ज ॥ तीनुशास्त्रनही सुतही ॥ रहेसदाय अरस
अनुभवगत ॥ बुझरुंड सुनधंनही ॥ ७ ॥ बोहो

रुहजेहीपुनीप्राचारजके॥शास्त्रसंयहोय
 त्यागु॥नारसहीतसंनिभवभुगते॥सोको
 होयनवेरागु॥८॥तेहीमाटेएहीगगकेठाठ
 सब॥जोकरिवदनडसनके॥डुनीदेवावंन
 दीर्घदंतकु॥न्यारेनीजभक्षनके॥९॥तदीप
 तायएहीभवकेभेखसब॥सुनीतपुरांस
 चेतु॥उपजतमोहनारकेलंपटा॥बोहोतीक
 होतफजेतु॥१०॥आवतनहीतोहेलाजनफ
 टकु॥सरखास्वानविचारु॥वीनुसुरजादमा
 रसीरखावत॥जावततेहीदवारु॥११॥लोक
 नंदकीख्योभधरतनही॥शास्त्रपुरांसुनी
 तमे॥करीतसमासहासुईतकेचीत॥लखी
 तजोयजीततीतमे॥१२॥बेरबेरउलटाईक
 हतहुं॥जदीपत्यागीकुतबही॥जेहीशास्त्रसंसा
 रीनकेनीज॥करणाधरीतनहीकबही॥१३॥र
 हतजोगवेरागप्रचलतव॥भ्रमीतभावतव
 होई॥पुरशाप्राद्यवीनुशास्त्रसुनकसुन॥ग
 येनउलटेकोई॥१४॥इतीनीगमतीराकरण
 रवीषम॥इतीश्रीचतुर्थेअंगसंपूर्णः॥॥१५॥प्र
 बकेतोवैरागधरीतईत॥सुनतपुरांसप्रग
 मही॥रंडीबाजकेरसीकबचतमे॥तपतत्या

॥ जे ॥ गहोय समही ॥ १ ॥ तपत त्याग सोई ती वृत्त डीत
 वत ॥ जेही अन्न व वीछर नकी ॥ अन्न वीछे दगत
॥ ३० ॥ करी तर सातल बो हो रूमि लन नही घनकी
 ॥ तेही परकारं न त्यागत डीत वत ॥ भव अन्न
 न वीछर नही ॥ भरम अन्न वन छे दीत करीत व
 गत ॥ उलट न मीले सजन ही ॥ ३ ॥ तदीप जे हुन
 त्ये होय स्वांती गत्य क्रता मीले वी न त्याग ॥ को
 टीक कष्ट सह्ये आपने तन ॥ जी न केन करीत
 समाग ॥ ४ ॥ तब ते सांख्य वेदांत सुनीत गत
 जावत त्याग वी लाई ॥ जौत्ये कोटी हस्ये वदर
 बस्ये ॥ रंक सीमंत वनाई ॥ ५ ॥ तेही रंक सीमंत
 जंत कु ॥ कोडी न मीले रच कु ॥ त्यो वात न के
 ज्ञान मुक्तस्ये ॥ क्रता मीले न दरस कु ॥ ६ ॥ ते माटे
 मुश्व के हेण मोक्ष मे ॥ मत कोई धरो सबुरी ॥
 नीज के लक्ष लहाय वी नागता ॥ जंत न पाय ज
 रुरी ॥ ७ ॥ सो नीज के लख अहंग एही मम ॥ पु
 नीकार न की रता ॥ ८ ॥ उभये को अन्न भव अन्न
 वयगत ॥ जी उह वीत एक तार ॥ ९ ॥ हवीत स
 रल एक तार क्रतार न ॥ न्यावस हीत जात न
 से ॥ तदीप भक्ती उर धरीत त्यागत ज ॥ अवीलो
 कीत ज्ञान न से ॥ १० ॥ तेही अवीलो कीत भक्ती

न्यारगत चतुरषु उपराई ॥ एकनी रंतर क्रता
 कारचीत ॥ ओर क्रिया सहाई ॥ १० ॥ क्रता का
 रचीत क्रता अंसके ॥ जेही सचेत सजातु ॥ ते
 ही सजात सचेत द्रष्टचीत ॥ क्रता कार सोई
 जातु ॥ ११ ॥ ओर चतुर अंत सक्रणके चीत
 क्रता कार नवहेई ॥ तेही अंश हथी यार कर
 ण संम ॥ क्रता लखीत नही कोई ॥ १२ ॥ जेही
 अंश हथी यार कर नजड ॥ जड जड कुजई ल
 गही ॥ पण करतार सजांण सचेत न ॥ इनमे ता
 यकु नपगही ॥ १३ ॥ यागी सके तो अंश पगे ल
 ग ॥ सजन सजात जवेही ॥ बीनु सजात सजा
 ण वीनातो ॥ को करी करे सनेही ॥ १४ ॥ जबते
 अंत सक रण ईडी गुण ॥ एही जड वत सबको
 ई ॥ तांम रूप गुण द्रष्ट पदन लग ॥ अवी लोक न
 कर ओई ॥ १५ ॥ चेतं न तो जडके साक्षी पण ॥ ज
 ड चेतं न लहे कमही ॥ जो ये चीतर की चीतर
 नकु गत ॥ चीतर सहत नही गमही ॥ १६ ॥ जब
 ये क्रता अंसके अंतस ॥ द्रष्ट पण तीज सोई ॥
 तेही करता मेहवीत एकायं न ॥ जड चीत ला
 गनकोई ॥ १७ ॥ एही परकारं न हवे वीना गत
 ती वुराग नही तजही ॥ प्रोक्ष परम उत कष्ट ॥

नरचं

रतसे ॥ क्रतान्नायकुमजही ॥ १८ ॥ जदीपरागवै
 रागरखतजीनु ॥ तीजपतीपदपावंतके ॥ तदी
 पतायनही सुनीतशास्त्रकु ॥ वदीतनारीके
 जनके ॥ १९ ॥ पुनीतनारकेवचनसुनीतसे ॥
 सेहेजसुभावबोलतके ॥ जीनकेबाधनलगत
 त्यागकु ॥ कुहुदृष्टांतरखोलीनके ॥ २० ॥ जोकोई
 तामसदेवहीउचरत ॥ ओटमनुसकीसोई ॥
 तीनकेनीजमुखवचनसुनीतसे ॥ मरतनही
 कीनुकोई ॥ २१ ॥ तेहीदेवंतकेसंधीउपासनक
 रतहारसंतरही ॥ सोहीमंत्रजेहीजनकुसुना
 वत ॥ तुरतजाततेहीमरही ॥ २२ ॥ यागतवरन
 नसंधीनारके ॥ शास्त्रपुराणसबेही ॥ तेहीशा
 स्त्रसुनललीतनारके ॥ त्यागनबंधसकेही ॥
 २३ ॥ ओरत्यागइतिकेतनअलपीत ॥ संप्रदायचौज
 नके ॥ त्रीगुणसक्रअवतारजोतल्यौं ॥ एहीउपा
 ससबनके ॥ २४ ॥ तेहीउपासनकेत्यागनकी
 कुहुजीनुलक्ष्यलखाई ॥ जेहीजीनकेदेवनकुद
 रसीत ॥ सत्रपुराणजुगाई ॥ २५ ॥ केतेकतेहीपु
 राणसुनीतसे ॥ तजीततत्यागउमागी ॥ ईष्टदे
 वसंजोगीजानीके ॥ नुलेभरमअभागी ॥ २६ ॥
 केतेकतोतपजोगकरीनके ॥ परसेनीजपती

॥३१॥

यंतकु ॥ जुगल जोरी के दरस पर सकर ॥ उलट
 भईत गती यंतकु ॥ २७ ॥ उलटी सोती जती व
 त्याग की ॥ ईष्ट जुगल कु जोरी ॥ तेही पण देखीत
 करत आराधन ॥ परमपती नको सोई ॥ २८ ॥
 करत आराधन ती जपती के उर ॥ पुनी पुका
 रतनेती ॥ तेही पती के ती जअरस पर सबी
 न ॥ भवत भाव भवसे ती ॥ २९ ॥ भव सोई भवी
 त भामनी नसे रत ॥ जेही ती जपती पावन की
 तेही रत दीये त्रीया यन कुईत ॥ की उकरे रवो
 जखावंन की ॥ ३० ॥ जेही आरत ती जअरस
 भोवंन की ॥ ती जपती दीये सब नसे ॥ सुरता
 सहीत अकल अरु रागीत ॥ लाये हंश जव
 नसे ॥ ३१ ॥ तेही सुरत पुनी अकल आरत कु ॥
 उलट मीलन जीतयांनु ॥ परमपती नसे जा
 ई मीलावत ॥ जांही से कीये पीयांनु ॥ ३२ ॥ सोती
 सुरत अकल आरत ईत ॥ सब वीधी खरच ख
 नाये ॥ बोहोरुपती नये कु नयो चाईत ॥ जे अ
 ही मणी गमाये ॥ ३३ ॥ ओर खरच तधुंन खात न
 खुदत ॥ सुरत अकल रत जेह ॥ कीटी कलप जु
 ग अरब न ओदत ॥ बीन एक नारसनेह ॥ ३४ ॥
 सकल साज अवी लोक नरत की ॥ समटी हवे

॥नरचं॥

॥३२॥

समोह॥तेहीसबनसेअधीकतेहरत॥सुनीयो
संतअमोह॥३५॥कोटीअनंतवस्तुअवीलोक
त॥नरनरबंधुरहाई॥सतगुरुमीलेतोल्हही
परमपद॥जीनकेनहीअटकाई॥३६॥एहीसे
बअषीलपदारथकीअत॥रतनीरबंधजना
ई॥पणजेहीतेहनारनरकोचीत॥बजरलेप
वतताई॥३७॥जेहीसुक्ष्मवीतअमलअंसको
चीततचीतचीतवनसे॥तेहीचीतलग्योतेह
नारीतसे॥वीछरतअंशआपतसे॥३८॥पीछ
रहेमतबुधअहंकारत॥घाटुपदारथघटके॥
सोसुक्ष्मअवीलोकसकेकौं॥छपीतबोधधेव
टके॥३९॥तबतेआपनाआपतकोमुख॥चीतद
रपंतदरसाई॥सोचीतलग्योतेहनारीतके
ईतकीनसेमुखपाई॥४०॥जबआपनाआप
नेदरसनको॥अनुभवहवेवीनाई॥तबकरता
अवीगतकीगतकु॥कुननसुनेपाई॥४१॥जब
करतानीजपरमपुरसके॥पावंनचहोजोसं
तु॥तोतजहोनीजनेहनारको॥धरीततत्याग
अतंतु॥४२॥तबसेनीजगुरुपरमबोधको॥
त्यागलगेतेहीजनसे॥जोपुरसातंतसहीतपु
रशके॥मीटेदरद्वेदनसे॥४३॥नारसनेहलगा

वतनरचीत ॥ भवीतवभंगवेरागु ॥ उपलेभेष
 भजावतभवहीत ॥ उरीतनारअनुरागु ॥ ४४
 मतक्रमवचनवेदवीतकेअज ॥ नीरखीतनी
 जकंत्याई ॥ धरीतमोहतीनुषुठपलाईत ॥ जीतु
 जुगजसअंत्याई ॥ ४५ ॥ तवतेनेहनकरीतनार
 से ॥ जीनुमीलनकीरतारु ॥ जौबीजगअंकुर
 नकेमुख ॥ कंचीतकटेनकारु ॥ ४६ ॥ तेहीनक
 रेउदभवअवनीतल ॥ कंचीतपडेकसरही
 तेहीबीजगकेफलकीआशनही ॥ बीनतक
 कीयेपसरही ॥ ४७ ॥ तेहीपरकारनआपनुआ
 पकण ॥ ईछुउदीतअंकुरही ॥ जीनकेमुखनी
 जसुरतसमोहीत ॥ नारलेगीतभईचुरही ॥ ४
 ८ ॥ चुरहवीतअंकुरमुखनसे ॥ नहीनउदीत
 ईश्वरीये ॥ बीनुईश्वरीयेचंतअहरनीस ॥ ला
 गीरहततनुतरीये ॥ ४९ ॥ तवत्येसतगुरुसर
 नआईका ॥ काजकीयोघरतजही ॥ जीनुषट
 काईतधरीतत्यागतन ॥ तदपीतायकेपोभजही
 ५० ॥ खानपानजेहीसहीतईजतके ॥ तीनमे
 नहीअटकावु ॥ पणजेहीनेहनारवीतरागीत
 सोकीतनहीसोहावु ॥ ५१ ॥ नारसनेहखोट
 श्रीयेधनकी ॥ पावनक्रतापरखनत्ये ॥ वारुत

नरचं

॥३३॥

कीवीतर्हंनहवीतगस्य॥जोंत्येअगनचखन
त्ये॥५२॥इतीश्रीपंचमोअंगसंपुर्ण॥५॥अथ
नरनीरमालहवीतहसावकोअंगः॥६॥तीन
केकहतहसावहकीगत॥सुनीयोसकलस
जनही॥जेहीजेतनीनीरमालनरनकी॥अवी
तभंगनीजतनही॥१॥वीसासोसंमरमहीचो
सट॥नरकुकासवीसेई॥तीनकेदीतउनमा
नकहतपुनी॥गततीसरवगन्येई॥२॥अष्ट
दशओरुपंचसहस्रजीतु॥खटसेउभेचाली
शु॥एतनेदीनकीबीडुपातसे॥तदीपतहोय
नरईसु॥३॥ईसपएकौहोयननरनकु॥तीन
केलसलखावु॥जेतयेनरवीतजातवीरजमे
सबवीधीसमऊपरखावु॥४॥बीडुबीडुमेपुर
शपुरशके॥आजमसकलसबेही॥अतसक
रणईडीगुणसहीतंम॥पंचतत्वतनजेही॥५॥ओ
रुचोसटअंगलकीहवीतव॥हांएपुएवकी
जीनमे॥सुरताअकलअंसआरतके॥तेहीप
एजावततीनमे॥६॥एहीछादशदशचतुरअंस
की॥पजाबीडुमेजाई॥एहीपरकारवरसचोस
टके॥दीनकीकेतीकथाई॥७॥तीनकेकहुपर
सांएअपरमीत॥सरमीतमीसरसहेतु॥ए

हीतनमेतनसमलसंजुगताप्रपरंमपारस
 खेतु॥८॥जेतेहीदीनउनमांतकहीतमे।बीड
 पाततनहोई।तेतेहीअंतसगुंतकीआद्यसब
 जावतसंघसकोई॥९॥एहीपरकारहानवी
 सुतीनकी॥होवतअंसजेहनकी।जौनरप
 तदलहीनहवीतसे॥जीतनहोयतेहनकी॥१॥
 ॥१०॥तेसेहीअंशराजदलउरभीत॥हीरणगभ
 वतताई॥नारसंगसंजोगकरीतसे॥कनक
 सीनभगजाई॥११॥जोकट्पीकदलसंचीत
 होयते॥ईसतासुनोजीतेहं॥कोटीकसीन
 संघजीनकेहुत॥तीनकुकुनजीतेह॥१२॥अब
 तीनकीगनतीगनवावत॥श्रीतासुनोअक
 लही॥एकपक्षअगणीतहोहुते॥केतीकहोय
 अकलही॥१३॥चोसटवरसपुरसकेदीनह
 त॥खटनवअएहजास॥ओरपंचसेउभेनेव
 लख॥जीनकीवीधीवीस्तास॥१४॥दीनदीन
 प्रत्येबीडएकनमे॥गुनघणजतअंतसही॥प
 णवईडीदशसुरतअकलरत॥कहतसमार
 समसही॥१५॥प्रथमहीसुरतअकलआर
 तवीत॥जीनकेसुनोवीभाग॥चोसटसेहेर
 हजारसप्तपुनी॥देवीशसहीतसमागु॥१६॥ए

॥ नरचं

तिहीजातवीभागवीडुमे॥चोसटवरसदीनुमे
 सुरतअकलआरतकेवीतमे॥हातीहीतजी
 तुमे॥१७॥पुनीगुनघणलखएकआरजीनु
 दशत्रीशहजारु॥तीनकेउपरीतयेसीअंस
 मील॥गुणघणकीयेसमारु॥१८॥तेहीपण
 जातवीभागवीरजमे॥कारणकामसमल
 ता॥तेतेहेरजतमसात्वीकतीनघण॥पाव
 तपेजतीबलता॥१९॥अबकेकहतचतुर
 अंतसके॥अंसवीभागजीतेहु॥चतुरनेव
 जीनुयेहेअंसससे॥उपरीतवेशतीतेहु॥२०॥
 एतेहीअंतसकरननकेजत॥अंससहीर
 समेहु॥तबजोसनभररहतनअंतस॥आ
 क्रतवंतअमेहु॥२१॥तेहीमाटेचतुरनअवी
 लोकत॥पातनपीचआगमकी॥आधारे
 आधारनउचरत॥अहीतवओटनीगमकी
 २२॥जौंपरहीनवीहंगंमवीचरत॥धरधरपा
 वधरासे॥जाईलगेपरवतपतीकेसीर॥उरी
 नसकेआकाशे॥२३॥तीराधारतेहीअवती
 छोरीके॥वीचरनसकेवीलतही॥लोकवी
 तायवीहंगहीनपर॥वदीतवसुरतमीलत
 ही॥२४॥आचारजअगतीतअवपरा॥वयाक

॥ ३४

रनवेतनके। पुं परधांत बंलके भवीतल। भास
 कभवखेतनके ॥ २५ ॥ भवसोई भवीतनाम
 रूपगुंनके। ओरपुरसपरकरती। अजभव
 आद्यप्रनाद्यसबनकी। पांहां लो सुरतीस
 मरती ॥ २६ ॥ पणकरतारपुरंजंनपदके। अनु
 भवप्रकलप्रघाडु। कोउनकीयेनीजभव
 तीआद्यधर। जीनकेबादबेघाडु ॥ २७ ॥ बादवी
 वादकरीतकोउजीनके। अगमगतीबीत
 कुनकी। अंतसकरनकरारीवीनाकोउ
 ओरसहीतकमगुनकी ॥ २८ ॥ बोहोरुसुर
 तओरुप्रकलप्रारतके। आगमकीयेवीभा
 गु ॥ तेहीपणतीष्टभवीततनभंगुर। गमगई
 गमनसमागु ॥ २९ ॥ एतेहीजतमतजोगह
 बीनसे। भवीतनवीकलसरीरु। तेतेअग
 मगतीनकेलायक। अनुभवकरनअमीरु
 ॥ ३० ॥ सोतोसकलवीभागभंगुसे। हीनताभ
 ईतरककी ॥ जदपीअगमगतीलहहीतायको
 लयेसोक्रताफरककी ॥ ३१ ॥ क्रताफरकईत
 केईतकीसब। नीगमशास्त्रलखताई। जाही
 परंतुपरमलक्षगत। तबसेकोहुतपाई ॥ ३२ ॥
 अबकेसुनोइंडीदसकेरस। अंगवीभागग

नरवे नीतही। जाहेर नुरजुहरही राईत। जुगजन क
 रनजनीतही। ३३॥ देलख छत्री हजार चतु
३५ रसे। पुनी चतुरसेताई। इति मेयणाएतने उल
 चणसे। रहत नत नरसनाई। ३४। बोहोर
 हश्रोत पंचतन केतत। जावत भागजेत नही
 अवनी तेज अपव न सुनको। खाली परत
 खेत नही। ३५। एकलषसे हे स्त्रागार चतु
 रसे। चोसटवर सरोजनकी। एतीनी बलता
 होवत जीनमे। पंचतत्व केतनकी। ३६। कहत
 दुष्टप्रबणवपेचकी। चोसटवर सनीसा
 की। प्रकृती पुरस संजोगहवीतकी। गनती
 लखाबुहताकी। ३७। सकलशरीर तंतके
 कारंन। रोमरोमरगारगे। स्त्रावर जंगमवी
 खचराचर। अणुनी आद्य सबजगके। ३८।
 ओरसती रजतमकेतनसे। रवीससी स्त्रा
 घदेवंतही। जीनके समलचलाय सकलको
 वीछरे भवीत अमनही। ३९। एहीपरकारस
 कलजडतंनको। जगदेखनके जीवु। तेहीते
 परषपरतनाडीनमे। जीनते मरतसजीवु
४०। अद्भुतवस्तु अमुल अनोपम। ततमे
 पुणवसमीरु। तीनकी करतहां नहरसा।

एक ॥ जब जन होय न सधीरु ॥ ४१ ॥ बीनुहुस
 धीरवीनातरसंमत् ॥ अनुभव न होय भ्रम
 मको ॥ कदपीक करे तो बुधकी वाबज ॥ सरस
 ती साधसुगमको ॥ ४२ ॥ यण अनभे तो अगा
 धमाहा दरध ॥ जो चंता मणी धंन ही ॥ सुलतो
 लजीनको नही थावत ॥ पावत जोग वजन ही
 ॥ ४३ ॥ तेही नीज जोग करत जुगतनकी ॥ आगे
 देही देखाई ॥ कीने हुतंत सकल जेतने भर ॥ जो
 जनरखे जमाई ॥ ४४ ॥ तीनमे जेतनी बनीत सो
 ईसदा ॥ तेतनी अनभे पावे ॥ तो जनको डीतके
 बदलेईत ॥ परसको हुगमावे ॥ ४५ ॥ तेही पार
 सनी जपण वसमीरन ॥ जावन ही रजनावुची
 सठवरसखुनकी खडतल ॥ सो सब गनीत
 गनावु ॥ ४६ ॥ षटनवलस्य हजार तेही तने ॥ पुनी
 पंचसेवी शु ॥ येतनी लगे वीघातमाहातमे ॥ त
 बनपायजगदीशु ॥ ४७ ॥ एही परकारत होत
 नारकु ॥ तनके तत्व वीघातु ॥ जेही परकारंनकी
 येपुरसकु ॥ जावंन जोस सधातु ॥ ४८ ॥ एही उ
 भयंनकी हानी बरा बरा ॥ भवीत जोग संजम
 ही ॥ एकलकर कडतल नही वाजत ॥ एक एक
 से सोंतमही ॥ ४९ ॥ तेही माटेतनु जुगल जोस

॥ नरवे

॥ ३६

की ॥ समजावंत कही सोई ॥ नरनारी खुनस
भरभराभर ॥ कोउकीनुकमनकसोई ॥ ५० ॥
एहीपरकारंनसकलजांहांनजग ॥ नीजत
नखुनीनीरासी ॥ जोकोईनरनरवीतनर
मालीक ॥ नीजमनोरथतहीपासी ॥ ५१ ॥ नी
जमनोरथसोईक्रतामीलनकज ॥ आपनु
आपजीनुअंशु ॥ ओरकाजईडीअंतसके
गुणघणसहीतअकंसु ॥ ५२ ॥ इतिमेनीजक
रतारअंशके ॥ कोहोकुंनकाजसरेतु ॥ एतोअ
नीतपदारअनीतके ॥ सरखेसरखेसहेतु
५३ ॥ सरखेसरखेसहेतजेहनमे ॥ सुरतअ
कलआरतही ॥ जेहीसमरधीक्रताअंसकी
परभारीपतीजतही ॥ ५४ ॥ अंसईडीकीमध्य
अलाधीक ॥ एतीनुरधअजमाली ॥ जेहीजीत
नीखरचीततेहीतीनकी ॥ बीनुरखरचीतन
हीखाली ॥ ५५ ॥ ईडीद्वारजोखरचखनावत
एतीनहीततजबही ॥ एतनीअंसईसताजा
वत ॥ पावतयेजनीबलही ॥ ५६ ॥ बोहोरुअंश
जोकरिततायकु ॥ आकंतधरीतखुवसही
ईडीअंतसकरनसहीतगुन ॥ जीनत्येकरी
कुवसही ॥ ५७ ॥ जबतेअंसईसतासहीतंम ॥

ज्योत्स्नरपतवीतसेतु॥तेहीअंशनीजगुरुपर
मसे॥जर्मिलेकतासहेतु॥५८॥एहीपरका
रजंतजतमतही॥हवेवीनानीरधनही॥ती
नकेवचनवीलोकवीलासक॥खालीतगर
जेगगंतही॥५९॥जनकुबोधकरनअतीकुस
लीत॥आपवीटंडवीकलही॥जोमीडकपंक
जनीकहनके॥भखतजायनीजमलही॥६०
कोडनकीयेकसांगजीवनके॥कतातजी
कतपागे॥परमतत्वकेमरमनपाईत॥ए
सबजोगअभागे॥६१॥जोगअभागीसकल
जेहीजनके॥ज्ञानवीनागतहयकी॥इतइति
केहीसकलअनुरागीत॥इछनहीनीजपद
की॥६२॥क्योंकरीसकेइछनीजपदकी॥अ
नीतपदारथफंदे॥सुरसुरीनरअहीपती
अजभवल्यो॥ओरलीगतआनंदे॥६३॥जबते
नीजपतीकताकाजकोड॥भवभरधरतनसा
गु॥नेतनेतंतकीयेबीछरनके॥राखनजेही
अनुरागु॥६४॥अनुरागीतजोंकपीपुरसधं
त॥कोडीनखरचतजोये॥तोंजनकुधंनकी
येतत्वजे॥जावतदेतनतोये॥६५॥पणअबके
बीसागदेखाईत॥जीवकरनकुसरना॥अं

॥ अर्धे ॥

॥ ३७ ॥

तरबुगमंजारीनकीगत ॥ दावलगेधंनहरना ॥
६६ ॥ जोकदयी आपनेपतीपरमीत ॥ न्यावसही
तनरणावे ॥ पुनीदेश्वावत आपनु आपनीज
जीतुसजाततनावे ॥ ६७ ॥ तदपीतायतंनमंन
धंनतीनकु ॥ देवतधोरखनधरीये ॥ कोठीक
लपवीघरंनपतीपायस ॥ तोतीनकुनसर
भरीये ॥ ६८ ॥ तेहीपतकीपेहेचाननकीनकु ॥
गुनकेज्ञानलखाई ॥ जीवप्रज्ञांणजांणबीन
जीनकु ॥ लेवतपंथफसाई ॥ ६९ ॥ पंथपवाडवा
डरमतनकी ॥ आपनाकरीलखावे ॥ जेहीजी
नकेमतकीमजभुतकर ॥ सबवीधीसमज
परवावे ॥ ७० ॥ उपलेकरतरसीकरमणीक
मे ॥ अतीअभ्यासकराई ॥ मनबुधचीतअहं
कारलगेतांहं ॥ क्रताखोजकुनकाई ॥ ७१ ॥ इ
तीषष्टमोअंगसंयुर्णः ॥ ६ ॥ अथसकरतारहीते
पक्षपरिच्छेदनदेश्वावंननामसप्तमोअंग ॥ जोंबा
लीनकेबालखेलवना ॥ करतकेलमनमानी
तीनमेपणनीजमातअसकधर ॥ जेहीवीधी
रहीहेरानी ॥ ७२ ॥ हीदृष्टांतसीधांतकांममे ॥ ला
गतकहुजीतुजमही ॥ सुरसुरीनरसुनीजन
अजभवकी ॥ कहीहुतीनहीगमही ॥ ७३ ॥ तीन

कीसमरुत्यावलखवावत॥ नलहंकोउकहीजी
 नके॥ अतीसचेतवेतवीतकेपत॥ लहहीसो
 यभवभीनके॥ ३॥ कीयेआसुवालीनकेबाखक
 जीनुसीधांतसुतीजे॥ क्रतासेतीनहीहेतके
 हुनके॥ परहीसुजचीतधीजे॥ ४॥ एहीतनेमें
 ईडीदशवालक॥ मातसुरतजीनुतेही॥ बुंला
 कीटपतंगआद्यमेवसेसवनमेंएही॥ ५॥ तेही
 सवनकीईडीअलीगन॥ करतकेलतनसे
 ती॥ तारपीछेआपनेसुतकुलग॥ जावतसुर
 तसमेती॥ ६॥ दशईडीओरुसुरतसहीतइति
 वेधेहवियनपसारी॥ कुनरहेकरतारनकेतव
 लगनलगवंतहारे॥ ७॥ यावीधकेनरणीत
 करीकेतीज॥ देखेहसुरतपसारी॥ तीआभ
 वमेजोगीजतीजन॥ सहीतलगतसंसारी॥
 ८॥ तेहीमाटेनीजक्रताआद्यकु॥ कुनलहन
 उत्तईतमे॥ वेदपुरांनशास्त्रसमदायकु॥ फसी
 रहेजीततीतमे॥ ९॥ वेदपुरांनशास्त्रकेकर
 ता॥ सोनलहतनीजपदकु॥ तीतीनकेजेही
 श्रोतपठनके॥ क्पोंकरीलखेहारदकु॥ १०॥
 बीनुहारदनीजक्रताआद्यके॥ लहेवीनाकु
 लजगही॥ जोतेकणनलहतकरखीनकु॥

नरचं

३८

स्योरीत्येसबमगही॥११॥रीतेमगसोईअज
नहारवीन॥जेहीशास्त्रपुरांतही॥पढीपढी
मुएसहीतसुननारंन॥गयेसकलअधुर
नही॥१२॥अधुरनसोआपतेसरजनकी॥
जीनुनहीमालमही॥सुलेसकलपंथअग
वायन॥तोकोलहेअलिंमही॥१३॥आलंम
सोअवनीवसतारन॥अचुरचराचरत
नही॥ससपातालरसातलकेलग॥जेहीसु
रवसेगंगनही॥१४॥एतन्येभरमेआईगये
सब॥तबकीनुकुंनरहाई॥नीजकरतारत
केकारनकी॥कोउकीनुखोजनपाई॥१५॥
जबतेनीजपतीखोजवीनातो॥कहीतसक
लसबरीत्ये॥अदबदगयेअनंतकोटीजंन॥
कोउनहारेकोउजीत्ये॥१६॥हारजीततोपती
परमसे॥बीनपतीकोउकीनुकाई॥केबक
सेकेकरीतघुनायत॥तजेकेलेईसरनाई॥
७॥तीनकेकुहुदृष्टांतकरांमल॥समरुपरे
सदसोई॥जोरणमेतरपतीवीनुएकल॥रुंरुं
मरेजंनकोई॥१७॥हारेकेओरनहरवावे॥मा
रेकेमरजाई॥पतीवीनुकेपरभारीजीतसे
कुंनमोजदेताई॥१८॥मोजवीनामनोरथप

रीपुरंन। भक्तीसागकरननके। कुनकरही
 करुणेशकलीतवीन। आपन्येजांनवीनुजंत
 के। २०। जोकदपीजंनआपन्येजानवीन। क
 रहीसाहायकरुण्येशु। कुनरहेतवभवकी
 मांहांयजंन। जावननरकरनरेशु। २१। नरक
 सरगकेन्याववीनातो। पतीकेकोअधीकारु
 रचनारचीततायबीनुईजत। कारनकुनप
 सासु। २२। जबतोरहेअलाधीकभवजन। को
 उकीनुकाजसजेती। सुनकादीकनवजोगी
 आद्यशीव। कुनकजभयेफजेती। २३। ओ
 रूपोसुणजगजीवजंतके। रत्यरत्यकुंनरचा
 ई। अरसअचानकअमीचुवावत। सांमृत
 देतसचाई। २४। नीजकेहुकंससुरसबवरत
 त। घडीपलकनवचुके। चंदसुरओरुतुब
 रवायन। खटमाहीकुनवसुके। २५। एहीपर
 कारंनअदलचलावंन। अदलीपुरशपुरंने
 अरेतायकोउसजनहारकु। नुगजनकोहुन
 जांने। २६। आभवकीयेकतारंनजदके। अष्टा
 आपरहाई। वेदपुरंनशास्त्रकेव्यगता। कोहु
 मरमनहीपाई। २७। मरमलहेवीनपरमपुर
 सके। पतीबीनुसकलयसाई। खावंनधते

खलकबीनुखावंत॥ मरमरजायपहाई॥ २८॥
 एहीपरकारंनसकलकुवारक॥ कोहुव्याह
 नहीव्याहाये॥ सरखेसरखोकरीतसनेहक
 पतीपरमवीसराये॥ २९॥ सरखेसरखासो
 इपदारथपुरषआद्यगुणघणही॥ ओरअंश
 विसिसपरमपुनी॥ यात्येफरकगतकुणही
 ३०॥ तेहीमाटेनीजकरतारनके॥ तहीतउ
 पासकजंतही॥ आपताआपउपावंनतेही
 तजगहेकरतसरननही॥ ३१॥ करतसक
 लकरतासंकलके॥ अंशरहीतअल्पजे॥ ओ
 रअतीतअवधीअनुरागीत॥ नीजपतीपरम
 अलगते॥ ३२॥ पतीअलगजेहीलगनलगावत
 माहायमाहायवीभुतीनमे॥ कताआयवीनु
 कुतनीवाजीत॥ आपनसेतीजेहीजीनमे
 ३३॥ छोटेमोटेअंशअखीलमे॥ कताफरकते
 हीतीनसे॥ ज्यौबाजीगररचतबाजीकु॥ आ
 पअलगजौजीनसे॥ ३४॥ माहायवीभूतन
 वीवीधीभातभव॥ अरससहीतईश्वरीये॥ नी
 जजनमोक्षकरनकारनपरव॥ तांहांजनीज
 नसरभरीये॥ ३५॥ दीरघउपाधज्ञानवीनुसुर
 की॥ देरवीनदलदरजाईपरमगुरुबीनपरस

पतीनकी ॥ जीतसे गतीनपाई ॥ ३६ ॥ ज्ञानवीता
 नीजगमनहीपावत ॥ सुरसुरीनरमुनीजन
 से ॥ बीनकीलीजोकुलपनबीकसत ॥ खडकसे
 येलतोपनसे ॥ ३७ ॥ खडकसयलतोयअधीक
 लोहनसे ॥ जोनहीखुलेकुलपही ॥ तेहीपरकार
 नदेवदीरघईत ॥ नीजपदपरखेअलपही ॥ ३८ ॥
 बुंसादीकभवअणनीआद्यकुल ॥ करतवीश
 अतभेदा ॥ नीजकारनकरतागतकेसम ॥ न
 येतीकहीतजहंबेदा ॥ ३९ ॥ तबतेनीजकरतारं
 नकीगंम ॥ पावनपरमअघाडु ॥ अवउतपन
 जबतेअबलगलौ ॥ अवीगतआद्यअनाडु ॥ ४० ॥
 ॥ ० ॥ अवीगतआद्यरहेनीजकरता ॥ जीनकी
 सुनोसकोई ॥ कोईकेहेसेवपासकलअजानी
 त ॥ तुमसतक्योकीतहोई ॥ ४१ ॥ जीनकेकहुन
 रणीतत्यावीकनीज ॥ समरुपरेजमजेही ॥ को
 हलहतनहीक्रताआद्यकु ॥ कहीतआणुहंमते
 ही ॥ ४२ ॥ शास्त्रपुरांनसीधांततकेसबआचा
 रजअनुभवही ॥ तेहीसीधांतनीगमतेनरणी
 त ॥ सुरतीसारखदेईचवही ॥ ४३ ॥ तेहीनीगंम
 गंमसुरतीसहीतईत ॥ अजउचरंनअवीग
 तही ॥ नेतीनेतीजीनुकीयेनीराकरण ॥ अगम

॥ अहं ॥

॥ ४० ॥

पोकारूपतही ॥ ४४ ॥ अगमयोकारूपतके
गतकी ॥ गती सबनतेलेई ॥ कीयेपुरांनशास्त्र
षटकेमत ॥ जुगधरजाणसबेई ॥ ४५ ॥ तोनीज
पदकरतारपुरंजन ॥ कोहोक्योंकरीकुंनजाने
नहीगुंमकीयेसारमलेईजीनकी ॥ भवभरम
येसहानै ॥ ४६ ॥ सोहीसहानंभयेतेभवजन
क्रताकालक्योंबुजे ॥ बीनकरतारबुजबाबज
के ॥ जबसेकीयेअबुजे ॥ ४७ ॥ एहीपरकारसक
वभवभरमत ॥ नीजपदनीरूपवीनाई ॥ जोको
ईबुझवंरुकेपलवंन ॥ तेहीसबवंरुहरहाई ॥ ४८ ॥
जबतेनीगमबुझकेपलवंन ॥ शास्त्रपुरांनसबे
ई ॥ जीनकीगमभवसकलभेदीतव ॥ कोउकी
नसेसुनलेई ॥ ४९ ॥ तेहीसकलगमज्ञानसब
नके ॥ नीजपतीपदफलबीनही ॥ तबसेसक
लअज्ञानअपीलकुल ॥ नीजपतकेहंमकीत
ही ॥ ५० ॥ इति सप्तमसंयुगः ॥ अथ परमगुरुवी
शसवरननकीनामअष्टमांशः ॥ ८ ॥ तेहीमा
देनीजपरमगुरुवीत ॥ पतीपरमनहीपाई ॥ ज
बतेतारनतरनपुरसके ॥ क्योनसरनकीउजा
ई ॥ १ ॥ तेहीतारनसतगुरुपरमपुनी ॥ वीशेश
अंशपरमही ॥ अगमनीगमगतीक्रताकरत

की॥ पावत सकल मरमही॥२॥ करत मरम पा
 यनपती भंनकी॥ मांहांता परही दरसही॥ ते
 हीते त्रसीत होत पावन रत॥ उपजत हरदे हर
 सही॥३॥ हरदे हरस उपजन से अकलीत क
 लीत होय की रतारु॥ दीवने नसे दरस परस
 कर॥ भवीत ता यनी सतारु॥४॥ नी सतारन
 सोई भुगत मान भव॥ फोगट फेर करनही॥
 सदा सर्वदा रह हीता यपद नी जपती परम स
 रनही॥५॥ नी जपती परम सरन पावन की
 परस कल सुनवाई॥ करही सोही एही क्रीया
 अलोकीत॥ जीनु करता अनुराई॥६॥ अनुरा
 गीत नी जपती पद पागीत॥ करनी अकल अ
 रुढही॥ सोनी जजन कु देई देखा रति॥ अतही
 ज्ञान गम गुढही॥७॥ गुढगं मज्ञान सोनी जका
 रन कल॥ परम पुतीत बावजकी॥ जेही डरल
 भसुन कादी क आद भव॥ तोगत कुंन सावज
 की॥८॥ एही परकार लक्षके नी जपद॥ पावत
 परम वी भागी॥ केहं कुवेर से रजीनके सद॥
 सुरलभ संत समागी॥९॥ तेही संत नी जपर
 म पुरसके॥ अरस परस एकताई॥ तदीपतेह
 ते परम मोक्ष पद॥ परम पुनीत से पाई॥१०॥ जे

अदे

॥४१॥

हीनीजपतीपरमकेपायल॥ न्यावसहीतनीज
 धांसु॥ तेहीपवरावेओरजतनकु॥ अवीगत
 अटलवीरांसु॥ ११॥ अटलवीरांसुमधामकेधर
 त॥ केवलनीजकीरतारु॥ केहंकुवेरतायस
 रतनपर॥ अहंगअंशततवास॥ १२॥ अहंगअं
 ससोईआपनुआपसदा॥ नीजपतीनीजसं
 कल्पके॥ जादीनमोजद्वैतउपजीतहुता॥ भी
 नभयेसोईकल्पके॥ १३॥ पणहंमतोनीजया
 सरहनके॥ सधरसमीपसदाई॥ कल्पकल
 पजुगमाहीजनावत॥ क्रतारखोजकरुणाई
 १४॥ बोहोरुहरहतनीजपतीपरमपे॥ अरसपर
 सअनुरागी॥ जांहीजांहीपरमपुरसपठवाव
 त॥ जावतधरीउमागी॥ १५॥ ओरअंशजेहीअ
 खीलखलकके॥ नीजत्येभीनभयेउ॥ जबआ
 येतवत्येअबलगल्ये॥ इतिकेइतरहेवु॥ १६॥ रहेस
 कलइतिकेइतअंशु॥ नीजगमज्ञानवीनाई॥ आ
 घसकरताकारनकोउने॥ कीयेनहीकीनुताई
 १७॥ जेहीभयेआचारअवनपर॥ तीनुसीधांत
 सुनेह॥ सकलअंसतांहांरहेमोहीतरत॥ जत
 मतजानीजुनेह॥ १८॥ जुनेपक्षसोईक्रताकरत
 के॥ ईश्वरआघुवीभूतके॥ अल्पअंसजांहांर

हे आखें बीत ॥ सगुण ईष्ट संजुत को ॥ १९ ॥ ओरु
 नीरगुण नीरसत्व नीरंतर ॥ पागे हंस परम ही
 ते ही अकरत ईत ईष्ट करत मे ॥ करता कुत धर
 म ही ॥ २० ॥ एही उभये अवी लोक न लायक ॥ बीत
 आपने सरजन ही ॥ अकरत ओरु करत वके क
 रता ॥ कुत कज दीये समन ही ॥ २१ ॥ जब ये अंश
 खोज कों कर हीत ॥ आगु वीना सब अंधे ॥ अग
 म गये भु लाय आचार ज ॥ नी जग म वीना नीरं
 धे ॥ २२ ॥ ते ही नीरंध न्या वी लु नीर मीत ॥ नी
 ज करतार वी न्ये ह ॥ सबने थपे करत के करत
 ओरु अकरत बं स जे ह ॥ २३ ॥ अकरत के आप
 नत ही अंशु ॥ कता करत के बंधु ॥ एक बंध व एक
 अकरत के पद ॥ कुत से कीये समंधु ॥ २४ ॥ बंध
 व सोई करत के करत ॥ अकरत बं स अमो ह
 पुण आपने सरजन नी जसां मत ॥ जब ये न ही
 न दो ह ॥ २५ ॥ ए भव के ई न की म ही अट को ॥ हठ प
 रती त ज मा ई ॥ वं कत ही ई त ज ग जी व न को ॥ आ
 ग ले ग ये फ ना ई ॥ २६ ॥ वचन पुराने फ से सब फो
 ग ट ॥ अनु भव आं ख्य वी ना ई ॥ साची कहत पर
 म गुरु पर मीत ॥ जी तु परती त न पा ई ॥ २७ ॥ ए ही
 परकार स क ल भव भर म त ॥ कत व न को पद

अहे

॥४२॥

पागी नीज करतार लहे नही लंपट जिही अग
न्यांत अभागी ॥२८॥ तेही अज्ञान रखा भवके
मही ॥ शास्त्र पुरां न पठन के ॥ अनुभव नीष्ट
करीत माहाजन के ॥ यपीत वचन वडन के
॥२९॥ बडपण सोई जीनु वीते काल बुद्ध ॥ तीन के
सब सराई ॥ जोत्ये भेड पुरां नी बकत क्य ॥ नवी
न सीघ समताई ॥ ३० ॥ ओरु व्याकरण सुर के सु
ध कहित म ॥ प्राकृत करीत अभाव ॥ ज्ञान हीत
गंडु रग ती वीन के ॥ समरुत नही नीज न्यावु
३१ ॥ प्राकृत बुणीत वकी ये पारस के ॥ व्याकरण
बुणीत कन कहि ॥ अरथ वीचार करीत दोह
न के ॥ अधीक म कुंन जन कहि ॥ ३२ ॥ तदीप
ताष प्राकृत व्याकरण ही ॥ अधीक कुंन कुंन के
ह ॥ पण जीनु अरथ सरस पद परमीत ॥ तेही ग्र
णीत करी लेह ॥ ३३ ॥ व्याकरण सो वदीत व वेद
वन के ॥ जीनु प्रती वाद करन कु ॥ देश देश के वी
वीधी भासकृत ॥ तीन की सुक परन कु ॥ ३४ ॥
पण प्रति नीज वत प्राकृत की ॥ सुधी समरुस
बेह ॥ अनुभव अरथ वी लोकी पाय पद ॥ व्याक
रण कां मन केह ॥ ३५ ॥ व्याकरण पठ पठ सुवे सकल
को ॥ वी प्रवेद कुल घर मे ॥ वीन सत गुरु जवते

अब लगस्यौं ॥ कुटुंबसहीतभवभरमे ॥ ३६ ॥ त
 बजेहीतेहीपरकारजीवनके ॥ काजकरन
 सेकांसु ॥ क्याभासागीरवांणकथनमे ॥ जोंहं
 प्रभुपायवीरंसु ॥ ३७ ॥ जबक्याहारहीगीर
 वांणभासकी ॥ अदकेएकगमाती ॥ सतगु
 रुमीलेपरमपदपावत ॥ उभयेवांणअमा
 ती ॥ ३८ ॥ अबकोईधरोमानमतजीनके ॥ व
 याकरणकेवेतु ॥ क्यामनुसक्यादेवनउचर
 त ॥ प्रभूतोपेमसहेतु ॥ ३९ ॥ जोंमातनकुबा
 लबराबर ॥ दीरघलघुसमसौई ॥ दोहनकेउ
 चरनअवणीतहीत ॥ अधीकलुंत्पनहीको
 ई ॥ ४० ॥ सोंगीरवांणउचारदीरघसुत ॥ लघु
 वचनप्राकृतही ॥ नीजकरतातीहेतुलहत
 एक ॥ गणीतनगीराआकृतही ॥ ४१ ॥ तबस
 रजनएकसाचकेसंधी ॥ अंतरभावसहेता
 ओरसकलसबसुसकज्ञांनिके ॥ करतनहे
 तहमेत ॥ ४२ ॥ तबतेसाचपेमप्रभूपरते ॥ र
 खीनीरंतरतेहं ॥ तोराजीकरतारपुरंजननी
 नमेनहीसंदेह ॥ ४३ ॥ इतीअष्टसंग ॥ ८ ॥ संपु
 सकलदेशकीसमऊसरावनआकरणकरी
 तवीलोक ॥ नहीतरतोप्राकृतसेपतीतवजे

॥ अर्धे ॥

॥ ४३ ॥

हीजांहांकेवोवांकु ॥ १ ॥ पणनीजकरताकली
ततकोउकीनु ॥ व्याकरणओरुप्राकृतही ॥ पर
मगुरुबीनपरमपुनीतपद ॥ पावतनहीकोउ
कृतही ॥ २ ॥ तेहीमाटेगुरुपरमसकलसीर
परममोक्षकेदाता ॥ ओरसकलईतकेइते
गतकी ॥ करतकृतवीक्षात ॥ ३ ॥ सोनलहत
करतारपुरंजन ॥ अकरतकरतकथतके
काव्याकरणक्यागीरागंधही ॥ चवहीतभा
वरथतके ॥ ४ ॥ बेखेरउलटाईकहीतजे ॥ गु
रुपरमपरतापु ॥ शास्त्रपुरांनवारुतीतके
सीर ॥ नीजगुरुबीनजेहीजापु ॥ ५ ॥ जीतले
मीलेसकरतासरजन ॥ तीतलेकुंनअधीक
ही ॥ जीवकुबोधरखेईतकेईत ॥ तीनकेसी
रधीकधीकही ॥ ६ ॥ ईतईतकेसोईअनीतस
कलपद ॥ नीतकेनहीरहननके ॥ नीनमेर
खेजीववीलमाईत ॥ जेहीकलपंतदहनके ॥
७ ॥ अजभवओरुवैकुंठलोकगव ॥ पुरसआ
द्यपरकरती ॥ यांहांलौसकलअनीतभवही
तके ॥ नीजपतीपरमवीकरती ॥ ८ ॥ तेहीवी
करतकेईष्टथपीतईत ॥ आचारजेसबनही
लागरहेतीनमेभवभरजन ॥ नीजपतीपाय

कबुनही ॥ ८ ॥ जीवसंकल्पकेजनीतस्यफुरन
 लखेसो गंधपरतये ॥ भंडुरमाहीकुलालनपा
 वत ॥ त्यो नहीक्रताकरतमे ॥ १० ॥ ओरवरखकेपु
 स्पपत्रमे ॥ बीजबुदोरनपाई ॥ तेहीपरकारनजेही
 रचनारन ॥ रचनामहीनताई ॥ ११ ॥ ज्योयेईड
 घटाघनकीमही ॥ आपईडनहीसोई ॥ त्योकर
 तारकरतकीअंदर ॥ पावतनहीकीनुकोई ॥ १२ ॥
 ओरुक्रसतीकेक्रसनखेतकी ॥ कणकणजोत
 नीहारी ॥ तीनमेनहीक्रसनीक्रतकारन ॥ जे
 हीकणकेवीसतारी ॥ १३ ॥ त्योभवखेततत्वत
 नकरसण ॥ रूपसहीतरचनामे ॥ जीनमेक
 णईडीगुणघणमे ॥ रचनारननहीजामे ॥ १४ ॥
 तेहीरचनामेदेखीदीव्यगत ॥ अधीकसरस
 ईश्वरीये ॥ नीजकारणतीनुयपेआचारजत
 बजगजीनुसमरीये ॥ १५ ॥ ओरुतीनकेप्रती
 पादकरनदृढ ॥ संसक्रतदेईछापु ॥ जौबादलना
 णाचलवावत ॥ राजमोहोरपरतापु ॥ १६ ॥ तेही
 पणचलेकीमतबीनकेमही ॥ उपलीसुरतदे
 खनमे ॥ अंतरकेअवीलोकवीनावीत ॥ कप
 टधातउरीयंनमे ॥ १७ ॥ तेहीपरकारनअहस
 सरधर ॥ जबतेअबलगजेहु ॥ तेतनेभरकेस

॥ अहे ॥

॥ ४४ ॥

कलसाचारज ॥ उपलीद्रष्टसुरेह ॥ १८ ॥ तीन
मेकीनेतरखोजकरीतजीत ॥ नीजकरतार
पतीतकी ॥ गयेसकलईतकेमीतवरणीत
नीजकारणकृतजीतकी ॥ १९ ॥ व्याकरण
पदेखीदलदरजीत ॥ पतीतलायरतपागे ॥ केहे
एकेहेणकहीतनहीकरीतव ॥ अनुभवषोड
अभागे ॥ २० ॥ केहेणआद्यअजकेअनुभवकी
करतपुत्रपरमोधु ॥ आपवीसेईहतेतवतीत
कु ॥ वदीतववचनवीरोधु ॥ २१ ॥ वचनवीरोधु
करनकरताबीचतीवत्यागवीलयनके ॥ देई
परतीतसेसकृतकीसद ॥ सुरभासणकील
यनके ॥ २२ ॥ तीनकेलेईपरमानपतीतजंत
धरीतउरीतअनुराव ॥ तीनमेहढधीरजमज
भूतकर ॥ प्राकृतधरीतअभाव ॥ २३ ॥ पणपर
थंमप्राकृतपरभासीत ॥ व्याकरणवणीतपीछेह
तीनकेकरीतकरंमलकहहीत ॥ नरणीत
त्यावजसजेह ॥ २४ ॥ प्रथंमवांणीप्राजीनुप्राकृ
तही ॥ दिशदेशभीनभीनके ॥ फरकफरकबी
लीनकीबाबज ॥ पणप्राकृततेहीतीनके ॥ २५ ॥
जीनकेकरीतसमोहसकलअरथ ॥ व्याकरण
नामतीनेह ॥ आगमकेजेहीनरपचकरवृत

समटीजीनेकीतेह॥२६॥ प्राकृतकुलपभास
 भवसबकी॥ व्याकरणकीलीकबुजही॥ तीन
 कीकीलीपुनीतप्राकृतकृत॥ समजतअरथ
 सबजही॥२७॥ एहीव्याकरणप्राकृतपरभासी
 त॥ कीयेसकलसबतेह॥ जेहीजीनकीजंमुह
 तीतत्वता॥ तेहीतंमखचीतकरेह॥२८॥ तदी
 पवांणीएहीनहीदेवंनकी॥ उभेभासएहीभ
 वकी॥ नीगमशास्त्रसहीतंमईतकेसब॥ मा
 हादमनुसगतचवकी॥२९॥ जोकेदेशेसुर
 केसदभासए॥ तीनकीवैशमनुसही॥ जुवी
 परसपरसरलसंभुकी॥ तीनकीआद्यसब
 उसही॥३०॥ तबतेदेवमनुसएकतायंन॥ जी
 नमेहेरनफेरा॥ अरथवीचारंताअनवेगत॥
 नरणीतकीयेनवेरा॥३१॥ व्याकरणप्राकृतप
 तीतवेमकी॥ जाहांजमजीनुरतपागी॥ तीतके
 ईतकीमानतनहीते॥ ईतकेतीतकपालागी॥३
 २॥ व्याकरणकामपरंप्राकृतके॥ टीकेतलबुज
 नाव॥ पणप्राकृतकीसरलसमजसे॥ व्याकरण
 कामनकावा॥३३॥ तेहीमाटेनहीकरीतवादवी
 द॥ प्राकृतसोरुव्याकरणके॥ उलटपुलटनहीच
 लीतबेहवीन॥ एहीजगजनधापणके॥३४॥ जे

॥ अथ ॥

॥ ४५ ॥

ही जीतके देशनके उचरन ॥ तेही तीनके प्राक
तही ॥ तेही सकलके अर्थ अरोपण ॥ व्याकरण
करीत वीवतही ॥ ३५ ॥ एही वही वटभासण
तके सब ॥ सुरकी कही सहीतमही ॥ वीतुभा
सनके भार अगारन ॥ सकले सगज समदम
ही ॥ ३६ ॥ तेही समदमकी चलीत संपदा ॥ धर
सेती अबल गही ॥ वीतुभासण भरके रसपल
व ॥ रहत सदा रुगमग ही ॥ ३७ ॥ फलत फलत
एका एक ही जीत ॥ अंमते फल रसरीधके ॥ ओ
रुती क्षण स्वटके कटु कायंन ॥ कताकीनके
ही वीधके ॥ ३८ ॥ वीतुबोलन बोलनके जेही प
त ॥ पोखतहे सर भरही ॥ एसे परमदया लघु
पर ॥ अहंगवारीतीन परही ॥ ३९ ॥ आपने वीत
वंदनके जेहीतन ॥ रखत तोयतीन हेतु ॥ तो जे
ही जन अहोती सजं रवीतके ॥ कपो हरी होयन
सेखेतु ॥ ४० ॥ ओरु वीतु वंदनतनके करत ॥
पोक्षण करीत कहतही ॥ ईडी समेटवी कलची
तचलीतन ॥ रहत सेजजतमतही ॥ ४१ ॥ एही वी
धीतग्नतंतत रुंदरवीत ॥ ओरु नही बुरी भली
नके ॥ सहत घाव आपने पर सबके ॥ कतापाल
तलतीनके ॥ ४२ ॥ प्रेमपीत जीतके नही जनीत

५

549.

४५

त॥ ज्ञान नही नवलेसु ॥ सार प्रसार कथुनही
 जानत ॥ अंध परम जड भेसु ॥ ४३ ॥ तो हो परष
 त संभालते हुनकी ॥ सरजनहार सद्जेही ॥ आ
 पणतो नीज प्रेम प्रीतके ॥ ज्ञान सही तगुनगे
 ही ॥ ४४ ॥ तो तीन कुकेपो देत न करता ॥ परम
 मोक्ष पद आडु ॥ ताही वसावत अचल करी न
 के ॥ जेही नीज धांस अनाडु ॥ ४५ ॥ इती श्रीनव
 मंत्रंग संपूर्णः ॥ ॥ ६ ॥ जो जडके जतमत त्या
 गन परा ॥ वाचरही तवी नहेतु ॥ तीनके करीत
 न भावनाथ नीज ॥ कोन करीत आपनेतु ॥ १ ॥
 श्रीरुथावर जंगमकी फरकीत ॥ कहत सुनो अ
 वजेही थावरके प्रतीपालन उपले ॥ जंगम जनी
 तसनेही ॥ २ ॥ तदीप करीतीनके वंदन जन ॥ अ
 होए सेपती आपने ॥ बंधादीक भवकुजेही डुर
 लभ सुरपावत नही सुपने ॥ ३ ॥ जीनकी करीत
 नेतीनी गमादीक ॥ तेनपती उतईतमे ॥ एभव
 केसी धांत सकल मही ॥ लषीत नही कोउकी
 तमे ॥ ४ ॥ तेहीपतीनके अंस सकल ईत ॥ अच
 रचराचरमाही ॥ सुरसुरीनरमुनीजन अज
 भवले ॥ प्रकृती पुरुष लगजांही ॥ ५ ॥ तेहीसक
 लनीजपती करतवके ॥ करताथुई सराये ॥ अ

अधे

॥ ४६

सजेजीनुअंसआलेवीत॥ नीजगमगतीतपा
ये॥६॥ तदीपतायभवभरकेईमही॥ आपन
अंशतीनुनाही॥ एतोभवभरमावेनईतके
तीतकीगतीनकाही॥७॥ जबआपनेतीनु
अंशवीनातो॥ तीनुआपनेकपालागे॥ बडेबं
धकुवापकहतहो॥ गंदुरज्ञानअभागे॥८॥
राजकुवोरपाटनकेपतको॥ अमलसकल
सीरराजे॥ बरनअठारअनुजबंधवपरआं
एपजेहनकीछाजे॥९॥ अनुजबंधगादीपतवी
नके॥ ओरहुकंसवीनजेही॥ पीतायक्षसरभ
रकेसंसंधी॥ अधीकलुंनकीनुकेही॥१०॥ रा
जहुकंसगादीनसेमानही॥ लोकसकलस
बजीनकु॥ एहीवीधकीप्रभुताजीनुबंधव॥ पी
ताकहतनहीतीनकु॥११॥ जेहीजीनकेअधी
कारसमोबड॥ तेहीतीनसेतंमरहीये॥ पणमो
टेबंधवअमलीसे॥ तीनकुतातनवकहीये
१२॥ तेहीमाटेतीजतातसकलके॥ एकहीसर
जनहारे॥ बुंसावीशतमाहेशसेसलु॥ यकृती
पुरसलगसारे॥१३॥ आगलेभयेपुरानीपरख
बीन॥ नीजकरतारनसुजे॥ तीतकीकहीसु
नीतभवभरके॥ जंतअजाणअसुजे॥१४॥ तदी

पतायगुणनामरूपके ॥ ईसताथइसरावे ॥ तेही
 सकलप्रापनेबडबंधवा ॥ नीजकरतारनका
 हावे ॥ १५ ॥ नीजकरताअवतारलेतनही ॥ एही
 सकलगवाजी ॥ जेजीनकेप्राचारजेईत ॥
 थपेअनीतइतराजी ॥ १६ ॥ जौवनकेगौचारगोवा
 लन ॥ थपेअएकरएकु ॥ तीनकेहुकममहीस
 बवरतत ॥ पणचारननीजगेकु ॥ १७ ॥ जोकदपी
 गौरखुनकरेजीन ॥ तेहीरोसकरधावे ॥ भागीजा
 तबडसहीतसकलजंत ॥ तांहांनहीअमलय
 सावे ॥ १८ ॥ एहीवीधकेभगवांनथपेभव ॥ गौगो
 वालनसरखे ॥ जलममरणतेहीमेटसके
 को ॥ जीवथापनवीनुपरखे ॥ १९ ॥ माटेनीजक
 रतानीजघरथी ॥ अचलचलीनहीआवे ॥ जोजन
 होयअहमेसचि ॥ तीनकुताहीबोलावे ॥ २० ॥ अ
 लपनेतरराजअनीतके ॥ तेहीपणहुकंमबजा
 वे ॥ अरथपरेतीनुलेतबोलाईत ॥ पणनीजराच
 नजावे ॥ २१ ॥ आतोनीजकरतारपुरंजन ॥ जीन
 केकीहुनतौले ॥ ईडसंखवीनअमलजेहुनके
 तेहीकौंधेरघेरडोले ॥ २२ ॥ जेहीघेरघेरडोलन
 केईसता ॥ गादीपतनहीताथी ॥ राजद्वारसपा
 यनकुजीत ॥ पगवावततांहांजाई ॥ २३ ॥ तींनर

अधे

पतनरपुरशतीरंजन॥जेहीसकनकेहेतु॥द
 शप्रवतारपगयलजीनके॥चौदेईअंशसमे
 ४७॥तु॥२४॥तेहीनजानतपरमपुरशकु॥जीनेअं
 शउपजाये॥जेहीसांसांन्यवीशेशआद्यल्यो॥
 रहेअग्यअतुराये॥२५॥वीशेशकेसीधोतबुं
 के॥तेहीतीगमसेपाये॥आपनहीअनुभव
 अवीगतके॥सुरतीकहीतरतलाये॥२६॥इति
 श्रीदशमोअंगसंपूर्ण॥१०॥ओरुसांसांनअंशअ
 वीलंबे॥सुनीतपुरांनकवीतके॥नीजकेज्ञान
 वीनागतीहीनसे॥भयेसकलजीततीतके॥१॥
 एहीपरकारनअंधअखीलकुल॥वीसेसस
 हीतसमीह॥एतनेमाहीपरमपतकीगत॥
 कलीतनहीकीनकोह॥२॥जेहीअनुभवअ
 वीलोकएहनके॥देखेहदृष्टकरीनके॥आद्यथ
 कीअवलगलुकोउने॥कीयेनभालफरीनके
 ३॥वेदपुरांनज्ञानकेगमकी॥लहीगतीसुकस
 बनही॥उलजेअंशसकलजीतकेतीत॥वीसे
 ससहीतसुननही॥४॥यात्येअधीलअंशअनु
 सुजीत॥नीजकरतारपतीनके॥दीव्यचसुन
 रगीतकरीतकही॥पेखीतरतीरतीनके॥५॥
 नहीनंदेकोउकरीतन्याववीन॥तरकतमाधरी

यं न स्ये ॥ नीजगमलहीतनवेरनीशक्रण ॥ य
 पीतथापजगजीनस्ये ॥ ६ ॥ जेतनेभरभवमां
 हीभयेजंन ॥ अवधकालतनधारी ॥ तेतनेभ
 रनहीनीजकारनपद ॥ कताअंशअवतारी
 ७ ॥ बीनसतगुरुएहीमाहादमरमकी ॥ परम
 गतीनहीपावे ॥ एहीवीधीछंणकरनकेसंभ
 य ॥ गुरुपरमदरसावे ॥ ८ ॥ अबकेकहतगुरुए
 हीभवके ॥ त्यागवीनातपहीनके ॥ रेहेणीक
 रणीकरनकेकाहेर ॥ ओरुनहीज्ञानअगम
 के ॥ ९ ॥ ओरलहतनहीआपनुआपनीज ॥ पु
 नीअंशकेकरता ॥ जीनकेसुधसंकलपेसकल
 कुल ॥ जेहीउपजावंनहरता ॥ १० ॥ तेहीकरता
 रपीछवीनुपरमीत ॥ मरमीतमोजकरनके
 उपलेवाठभेखकुभजवीत ॥ खजवीतत्याग
 तरनके ॥ ११ ॥ यावीधीभेखधरीतसबवगके
 दुनीदेवावंनदरसी ॥ पोमीपरनकेरुचीतप
 दारथ ॥ पणनपायपदअरसी ॥ १२ ॥ अरसीति
 अवत्यासीएकनीज ॥ ओरसकलपदपरसी ॥
 कालऊकोरनकेजेहीलायक ॥ नांमरुपगुण
 धरसी ॥ १३ ॥ एसेहीभेखनकेभवबोधक ॥ पाव
 तवैपौसरजनकु ॥ जेसेलगतफुलफलजीन

॥ अंधे ॥ को वीवीधीभाती सब बन कु ॥ १४ ॥ जेही पर
 कार स्वाद के तर वरा ॥ तेही तीन से फल होई
॥ ४८ ॥ मीष्ट मधुर खट कटु के चर परा ॥ वर ख सररी
 ख सब के आई ॥ १५ ॥ ते से ही सीस गुरु बुद्धनन
 के फल ॥ इ वीत डीट दल लागे ॥ वं क न ही सीस
 के सीर देवन ॥ गुरु सररी ष गु न पागे ॥ १६ ॥ ते ही
 सकल गुरु की ये आग मजे ॥ वही तल वीश्व
 उगन के ॥ तीन के सीख साषा ते ही सर खे ॥ जौ
 ले फल वर खन के ॥ १७ ॥ तदपी ताय को ई हम कु
 कही त जन ॥ तुम हो पुरस पर मही ॥ तौ तु मेरे
 सीस च ही ये सररी ख तुम ॥ क दपी न हो य तुम
 सम ही ॥ १८ ॥ तदपी वं क पण तु मेरे सीस सीर
 न ही न देवन को उकी न के ॥ जे से तुम ते से ते
 ही उप जीत ॥ के हेण क ही र ही तीन के ॥ १९ ॥
 वन सपतीन की कही त मनने ॥ तरु जे से फ
 ल जौनी ॥ तौ सीस के अंधे र देखी तव ॥ गुरु की
 ना अग त्यानी ॥ २० ॥ एही वीध के न रणी त न्या
 वन से ॥ तुम सी पण ते ही सर खे ॥ जौ सीस हो
 य तु मेरे तुम से ॥ जौ ते क ही त फल व र खे ॥ २१ ॥
 ते तौ न ही न देषी तव को उकी त ॥ अ न व भ र न
 र नारी ॥ तु मेरे परम पुरस के सर भरा ॥ वं पौ

होवत संसारी ॥ २२ ॥ जो न हवे दृष्टांत दीन संम
 तव तुम वचन वीरोध ॥ आपसरी खहोय आप
 निजन ॥ जब परमाणु प्रमोधि ॥ २३ ॥ सीतो भये न
 ही उत्तईत मे ॥ तो कुंन न्यावत मेरा ॥ न्याव वीना
 नीर फलके उचरन ॥ अंध परम प्रदवेरा ॥ २४ ॥
 जब तो तुम तु मेरे बोलन मे ॥ आई गये बंधन मे
 तीन के करीत खुला सरवर रवर ॥ परीत जनी
 त सब जन मे ॥ २५ ॥ अब जे ही सुनो दैत परी उतर
 तीन के करीत करं मल ॥ ए भव के जे ही संतस
 मे वड ॥ हम न ही हल कह राम ल ॥ २६ ॥ तीन के
 कह दृष्टांत एक अब ॥ सुनो सकल सब संतु न
 ही समो वड कीये हं मन के ॥ ते ही तुम न जन वं
 तु ॥ २७ ॥ दीन कर दीपक सम न ही काहावत ॥
 जाहेर फरक जो वंन के ॥ रवी पर का सबुं लांड
 भरन के ॥ दीपक दर समीवन के ॥ २८ ॥ पण प
 र काशी क उभे करन के ॥ कह जी तु जन जम जे
 ह ॥ दीपक से दीपक होय सर भरा ॥ सुरते सुरन
 कहा ॥ २९ ॥ दीपक समो वड संत तीनु जन ॥ तव
 चहीये तीनु सर रवा ॥ हंम तो सुर परम प्रकाशी
 का ॥ कोई कवीर लकु पर रवा ॥ ३० ॥ जो सुरन ते
 सुरन होवत ॥ त्यों हंम से जन जो श्री करु पर का

सपरमपदकेसद॥पणहंसंमनहीहोई॥३१
 ओरुउरकेअंधेरमटाबुह॥रोमरोमरगरगके
 दीरघनेनदेउसकलदरसके॥रखुनअज्ञकी
 उमगके॥३२॥परहीसुऊअवीलोकअचरच
 राअरवीलत्यावनरणीतके॥कछुनरहेअन
 पेशीतकोउकीत॥भवभरकेउतईतके॥३३॥
 एहीपरकारधृष्टकरुजनकी॥समचरनतआ
 वंतकी॥आद्यअंतमधकीगमगतीयां॥पावे
 अगमनीगमकी॥३४॥यावीधकेजेहीसरल
 सतंतर॥होयपरमगतवेता॥ओरुआपनेप
 तकीरतउपजत॥सबवीधीभावसहेता॥३५॥
 पुनहीपायपदमोक्षमाहादरध॥तदीपनहोय
 ममगमही॥जोदीपकमाहाअज्ञसमायत॥सु
 रसमनहीजंमतंमही॥३६॥सुरतेअज्ञहोत
 जीनुदीपक॥अंत्योअंत्यअनेकु॥आपसरीष
 करेसबयंतकु॥उरआरतगतजेकु॥३७॥आ
 रतसोवातीसमजीनमे॥चीकटगंधगतज्ञा
 नु॥एतनेआजमसहीतमीलेजत॥तदपीनर
 हेअगत्यांनु॥३८॥जबअज्ञानजायजेहीजन
 के॥आपनुआपजीनुसुजे॥नीजकारनकर
 तारनकेतव॥न्यावसहीतलषबुजे॥३९॥यावी

धकेचेतनममसंतु॥हवीतमीलेजनजेकुआ
 पसरीखकरेजोपुजलीत॥दीपेदीपअनेकु
 ॥४७॥एहीपरकारजगावनजनकु॥हंमहेअक
 लपुरेशु॥अंशअनेकउधारकरनकु॥धरीआ
 येभवभेशु॥४१॥कारजसोकारनसमहवीत
 न॥दीपनहोयसुरसोई॥तौहंमसेजनभवी
 तमोस्यगत॥पणहंमसंमनहीकोई॥४२॥इती
 श्रीएकादशोअंगः॥समाप्तः॥श्री॥११॥श्रीरु
 अवनीएकतायनउदवीत॥वनसपतीबुह
 भाती॥पोखतरससमद्रुसकलकु॥फलउ
 पजितजितुजाती॥१॥अवनीसमोवडहवीत
 नकोवुकीत॥भारअगरवरखमे॥तरणआयु
 तरुमाहीवीलोकीत॥जमीजमकुनदरखमे
 ॥तेसेहीहंमधरणीजनतरवर॥पोखहुयेस
 असुल॥तदपीअंशकेउहोयनमोयसमजो
 तरुनहीजमीतुल॥३॥तुलथयनकेपरीतका
 सकु॥भवजलतोतरहीतके॥जोभेडासेलं
 घीतनदकु॥फरीनवसमकजकीतके॥४॥बि
 होरुहंमताकलपवुसतरु॥अवीगतअक
 लउदासी॥जीनकीशायचरनचीतवरतत
 तेहीतीनकाफलपासी॥५॥कलपतरुसेकली

तपावत ॥ जेही जीनके उर धरही ॥ पण जीनमे
 जनको हुन होवत ॥ कल्पतरु सर भरही ॥ ६ ॥ तो
 मेरे जन चरन हमनके ॥ जेही जीनु जमरे तपारी
 तोतीनके फल पायते हुनसे ॥ हंस संमलागन
 लागे ॥ ७ ॥ लाग लगनकी कहत रेहेगी रत ॥
 जतमत जोग जमाकी ॥ मेरे बचन प्रोलांगी
 काजको ॥ करही नतर कतमाकी ॥ ८ ॥ हुंकम
 वीनाकी तपाव धरत नही ॥ अपने मन मुखसे
 ती ॥ दुकदु कहो यजाय कहन पर ॥ मेरे मुखन
 सहेती ॥ ९ ॥ हलन चलन जेही करीत काजतन
 तेही मम बचन वदीतमे ॥ कबजक सोट चाह
 नही चाहकीत ॥ रहत सदा भयभीतमे ॥ १० ॥
 तेके करीत काय मुज उपरीत ॥ जतमत जोग
 जे हुनके ॥ सुरत तुरत चीतवन चीतके तन
 करीतन भान देहंनके ॥ ११ ॥ आवेई पोही र
 नीनरतसे प्रत ॥ मन मुख रहत सचेतु ॥
 वीलोकत उरके नेननसे ॥ आरत वंत सहेतु
 १२ ॥ पुनीवेश गवीषम सहीत मगम ॥ तन
 धन प्रोरुतरीयंनके ॥ अलग रहन प्रनुहत
 के जुथसे हेरत नही फेरीयंनके ॥ १३ ॥ नीमस
 नरखीत न्यारहंमसे संन ॥ प्रोरुचीत बुध प्रहं

कारु। वेधे ह्युपाणसहीतरहेवहीजंम॥ मीनपरत
 जलन्या॥ १४॥ नीखसीखसहीतमसमलस
 मरपण। करीतहंमनसेजेह। आपतरीखक
 छुरखेतहवीतव। मेरेवचनवीदेहु॥ १५॥ अंत
 रबाऊसहीतएकतायन। त्पारेनहीनीरंतु। ए
 कमेकहंमसेथैवरतत। करतनकाजएकंत
 १६॥ अगमनीगंसकीसुऊसतंतर। लहनल
 हेहमकेहु। तोतेहीजनतंतनधरभरहंमसे। छ
 पीरखेकछुकेहु॥ १७॥ एहीवीधकेजाननजन
 मुजके। तेहीनरहेभीनहंमसे। रखुकांहांती
 नकुहमकेवीन। गारनवरनआसमसे॥ १८॥
 तबतेतेहीमुजमेएकतारन। रहतसदायस
 मीहु। तीरमयतंतमलीतमुजमेसुऊ। अर
 खीतरहीतअछोहु॥ १९॥ एहीपरकारयारस
 सुदायक। खायकहंसहमारा। करहीतकीट
 वीहंगंमजोये। अंगीचटकएकतारा॥ २०॥ ए
 सेहीजनकोईजगीजगतमे। परखहंमनकीपा
 ई। तोतीनकुहंमकरतसमीवडा। ममरकी
 टकीत्याई॥ २१॥ करीतसमीवडजेहीजनकी
 अब। तीनकीसुनोकहतही। जोयेनर्युहं
 कंसदेआनकु। देखीसगुनमतपतही॥ २२॥

॥ अष्ट ॥

॥ ५३ ॥

जब लगी गुन तेही के तेही देखीत ॥ तब लगी रा
ज तेहन के देखी अगुन तीनु ले तछी नाईत क
रीत व अमल वीहन के ॥ २३ ॥ बिसेही जन गुरु
परम पुरसके ॥ करीत आप समजेही ॥ जो अ
भीमान धरे अहं पदके ॥ नरपकीये तम तेही ॥ २
४ ॥ तीनकी सारव कहत परवेदीक भेदीक जा
य भरमही ॥ मसल मानी मे भये पैगं मरा जब
रायल परमही ॥ २५ ॥ अह्राके जेही अरस परस
के ॥ हंम पदुह कमन माने ॥ सरदा करनकी ये
मोरीदन कु ॥ वचन वीडारी तराने ॥ २६ ॥ अह्राके
समदायरहनके ॥ तीनुकी ये बेतरपी ॥ तो और
नकी कुन गनी तमे ॥ तदीप चलो तुम डरपी ॥ २
७ ॥ सांम तकरे चाहाय सोधरीत व ॥ आपने सी
र पर सोई ॥ वचन वीडारीन करीत काजको जी
नकी कहीत सकोई ॥ २८ ॥ माटेही वाप मुसल ही
डुवनकी ॥ एकही राहरेहनकी ॥ साच वीना सा
हबको वुकीतकी ॥ करीत नवक सबेहनकी ॥ २९
तेही माटे साचनके सजीत व ॥ साज कपट वीन
केरु ॥ आसात्र सांम मी सईरसा ॥ तजीत ता
यभव भेस ॥ ३० ॥ निरुसी भैबंध भवनके ॥ आप
सरीषगत करही ॥ तब तेतीन कुत जीत तरण

561

५३ ॥

वत॥ भवहीतभाव इतरही॥ ३१॥ भवहीतभाव
 करन इतरनके॥ तेही लषखोजकरेतु॥ ओरु
 जीतकुकोउपीरसकेतही॥ इंडीपंचपरेतु॥ ३२॥
 तेही वैरागवीताएतनेही॥ कोउकीलुआंचनसां
 ने॥ सीलसंतोषसहणसमताकु॥ सुचीतसही
 तनहीरांने॥ ३३॥ तदीपपरमगुरुवचननीभावं
 न॥ तीव्रत्यागपथसेती॥ लालचलोभहसतही
 जीतमे॥ तोकोवचनतजेती॥ ३४॥ वचनवीडा
 रकरनकेकारन॥ लालचलोभहरसही॥ सोतो
 तीव्ररागसेतजीतव॥ जबतीनुनहीनतरस
 ही॥ ३५॥ मेदीतरसतमानहीतनकी॥ मनके
 मोहमुजाई॥ ओरुचीतकेचीतवंनतहीउबरी
 त॥ तमकीतरकबुजाई॥ ३६॥ देखीतीव्रत्यागत
 रकनसेएतने॥ जावतसुलजडाके॥ तवनरवेद
 रखोरोवुरोवुरग॥ कालनकरपमडाके॥ ३७॥
 सुनकादीकसीवसतरुषेश्वर॥ दरुसहीतन
 वजोगी॥ कालनडसेआद्यअबलगलुं॥ देखी
 त्यागवीनभोगी॥ ३८॥ तारपीछेसबवैशतेहन
 की॥ मरीमरीसकलगयेवु॥ पणवैरागयकीए
 तननके॥ कालननेरगयेवु॥ ३९॥ दहेसकल
 नरवेदजीनुतन॥ अकलअगन्यसेताई॥ जो

॥ ज्ञे

॥ ५२

लेडीमकदारभस्वतपण॥ कोयलखारखनही
खाई॥ ४०॥ स्वायलमेस्वायलकालनक्य॥ बुतवी
नाबाबजमे॥ तबतेकालतकततेहीतनपर॥ स
बवीधीसाजसबजमे॥ ४१॥ साबजसाजईडीगुं
नसहीतम॥ अंतसकरनसमेतु॥ बीसेपंचपर
करतीवरतवीत॥ जेतनेभरतनहेतु॥ ४२॥ का
मक्रोधमोहडंभकपटछल॥ एहीमलमेदसभरी
या॥ कालबाफकेभक्ष्ममीखय॥ जीनुतनस
भरक्ष्मकरीया॥ ४३॥ सुभरक्ष्मकरीयंतकेतंत
खावल॥ कालकलंधरकेतु॥ बीनगरुपरम
कोहुनहीउबरीत॥ चुगतसकलभवखेतु॥ ४
४॥ जबतीनतेनहीबंचीतकोउकीत॥ कहुद
ष्टंतहीजौसे॥ सुकेघासपावकजौपुजधीत॥
परवतपरदवतौसे॥ ४५॥ पणपरवतपरतर
णबीनाकोउरेहेवतकुनकरपसे॥ तरणआ
घतरुजडनजमायत॥ कहुतीनुजीनुडरपसे
४६॥ जीन्यसेसोमलहोतहलाहल॥ तेहीवीष्णु
वाजेहीनगमे॥ बसवेलीतरुजामतनहीजड
रलीतकेहेररगरगमे॥ ४७॥ तेहीपरकारंनत
रनगकेतन॥ वीष्णुवाउरवैराग॥ ईडीअंतसक
रनघासगुन॥ जमीतंनअतंगउमागु॥ ४८॥

कामक्रोधमदमोहमद्यरतः॥ तीनुपणजडन
 हीजामे॥ आसात्रसाअनीषईरषा॥ वेलनमु
 लेवीरामे॥ ४७॥ एतेहीसाजसकलअनुहतके
 मुलनमेदजमाई॥ वीछुवावतवैरागनेसस
 वा॥ उदभवकरीतनताई॥ ५०॥ तवत्येसकलसी
 धांतनकेसद॥ मायामोरचढहनके॥ तीवृतेग
 वैरागकपणवीन॥ कोउसेनहीभहनके॥ ५१॥ ए
 भवभयतथकीतीरभेनीज॥ वीनतरवेदनरे
 सु॥ करहीसकेनहीकोउउतईतमे॥ आघही
 अंतधरेशु॥ ५२॥ इतीदादशोअंगसंपुर्णः॥ १२॥
 अबजीनुतरनचाहोभवनीधुजल॥ नवकाया
 गतीवरही॥ ज्ञानभक्तीसहीतममहीमसरीत
 पायपरमनीजघरही॥ १॥ सोनीजघरमेवसे
 नीरंतर॥ अधीपतपुरसपुरेशु॥ सकलअंश
 केसरजनसंभृत॥ अवधकालवीनकेशु॥ २॥
 अचलसुदेहदीअडुरघटतंत॥ जेहीअचुतअ
 वेअरसी॥ धंतेधंनतेहीधामधरनवीन॥ अ
 धरअमरगतसरसी॥ ३॥ जीनुउपमाकीक
 हतवनीतनही॥ वीनुदृष्टंतदेवंतकी॥ जोत्ये
 सरभरकरीतकोहनकी॥ अपरमसुंनजेहंत
 की॥ ४॥ तेसमकेतोतेहीअमरवत॥ अवीगत

अद्वै

॥५३

अपरमपार ॥ अती अथाहन्थाह अपरमीत
खुदकेधामपसारा ॥ ५ ॥ अवर्णवर्णसुवर्णसो
भीतव ॥ नीजगमनेनदेश्वनके ॥ चरमचसुसु
रसहीतमईतके ॥ तीतकुनहीपेश्वनके ॥ ६ ॥
अतहीघोडअपरमपरजीतके ॥ अदभुतपे
जयसैरा ॥ चकीतहवायुतायतीतुनरखीत
सरजनसोजसहेरा ॥ ७ ॥ अवीरलभोम्यभो
वंनतांहांतेहीसंम ॥ परमीततेजपकासा ॥ ई
तकेसुरमाहाअज्ञसहीतके ॥ तांहांतहीकरी
तउजासा ॥ ८ ॥ तेहीतेतेजअखंडरहनके
आतोअलग्नेही ॥ पंचतत्वकेहवीतनास
मही ॥ अलगतेजतवेही ॥ ९ ॥ माहाअजुजअ
स्तांनअनोपम ॥ अचलसदासदसोई ॥ अ
खीलअंशवीतपनकीवस्तन ॥ जतुनीजो
नसमजोई ॥ १० ॥ जमीअसमातसकनही
सरजीत ॥ पंचतत्वगुंनसेती ॥ पुनीपुरसन
हीजोतनीरंजन ॥ ओरकीकुंनगनेती ॥ ११ ॥
जबउतईतकोअनुतानीहालन ॥ कालसही
तकीतुकोई ॥ तादीतहुतेसुनमेसरजन एक
लअरसअमोई ॥ १२ ॥ तेहीअरसएहीकीये
जोवरनन ॥ खुदकेरहनसदाई ॥ पुनीपुनीप

सरन करीत कालको ॥ जब त्ये हवी लउमाई १३ ॥
 जब हंसकी ये आग सब हंसके वरतन एक उप
 जकी ॥ पीछे वीषरीत भये सकलको ॥ वस्ती
 हवीतरूपजकी ॥ १४ ॥ जब ते एक भोवंतके उत
 पन ॥ आपन अंस सबेही ॥ पुनी उपावंत एक
 पुतीनीज ॥ वतनही एक तबेही ॥ १५ ॥ एहीनी
 जआद्यकही सबयंतकी ॥ पुनी अंतकी तेही
 बीचनही उत ईतको वुकरता ॥ करीतन वेरस
 बेही ॥ १६ ॥ जीनने रची सकल एही रचना ॥ बाकी
 त एक बाबजकी ॥ पीछे करनतर रवीको हुनके
 एही वीधी सजीसा बजकी ॥ १७ ॥ जब त्ये आद्य
 थकी जेही आत्मतेही के तेही अबेही ॥ पीछे
 करीत कछुकी ऊकी नने ॥ जेही के जेही जवेही
 ॥ १८ ॥ खानवान जीनु जेही जीवनकु ॥ तेही ते हुन
 कु सबही ॥ तरण आद्य वरवे ली अचरचर ॥ ध
 रही थकी सब जवही ॥ १९ ॥ जेतने भरतनु आ
 जीत आद्यसे ॥ पुकती पुरस अखल गही ॥ पंच
 तत्वरवी सखी गुन घणायें ॥ और सहीत सब
 जगही ॥ २० ॥ तीनमे नवीन तंतको वुकी नने
 उदभव करीत जेहंनमे ॥ न्यारा करीतको होन
 रणीतसे ॥ वरजीत आद्य वेसनमे ॥ २१ ॥ एहीपर

अद्वै ॥ कारुण्यप्रबलगतौ ॥ कृताकरतसबजन
 ही ॥ ईश्वरप्रोक्तप्रवतारप्रायभव ॥ अवरन
॥ ५४ ॥ कीनकधुनही ॥ २५ ॥ आयआपनेआचार
 जनेईत ॥ लीयेईष्टभवयापी ॥ अघबिचिगयेवी
 लायसकलको ॥ कोहुनरहेअघापी ॥ २६ ॥ जब
 तिआररहनकेसरजन ॥ परमधामकेपतही
 आसुकीयेवरननहंमजीनके ॥ जाहांनीजमा
 हादसुगतही ॥ २७ ॥ वारंमवारकुहकाहातीन
 की ॥ जीनकीअपरसोभनकी ॥ सारदेशश
 अनुभवीकवीकुललो ॥ गायनसकेसाहंन
 की ॥ २८ ॥ अनंतइडबुंलांडअसंखीत ॥ जीनु
 संकल्पयेहोई ॥ तोतीनकेनीजअेनवसन
 से ॥ वाकीरखेकीसुकोई ॥ २९ ॥ तबतीनुबर
 कहायकोहुनसे ॥ माहायसुंनमपजोसे ॥ आ
 यअंतकोउकुनहीपावत ॥ रहतअवरणीत
 तोसे ॥ ३० ॥ उग्रतेजमयेधामपतीनके ॥ कला
 बंबकलकेती ॥ परमपुनीततेहीअसवीलो
 कीत ॥ औरजीवंनकीनेती ॥ ३१ ॥ सधरसभी
 मपीउरवरसभरीतव ॥ करनअंशअचवा
 नी ॥ गुरुपरमवचनकेहवीतल ॥ जंतसकत
 नहीजानी ॥ ३२ ॥ अगनीतअवरणीवीनुवर

ननके॥ बाजंतरजांहांबाजे॥ तलवटेरटहंकारं
 नकीधुंन्य॥ गगनघोरगजगाजे॥ ३०॥ अमीत
 अस्यअवधीवीतुअपरम॥ सकलसुखदर
 सभरीये॥ माहादमोजमजभुतमनोहर॥ सुक
 मानअनुकरीये॥ ३१॥ एहीवीधकेनीजअरस
 अमोधीत॥ भोगीतभवरेजेहनके॥ अतहीक
 एवैरागतकेफल॥ पावनअंशतेहनके॥ ३२॥
 तीव्र्यागतारीपकेतदवत॥ तेहीअस्तानअ
 बुपा॥ सदासदीदीतरहतअचलअज॥ जुगध
 रकोईकजनुपा॥ ३३॥ तेहीअस्तानअनीपम
 कीमध॥ तरवतपतीनकोराजे॥ चंतामणसेस
 रससोभीतव॥ ज्हांनीजपुरसबीराजे॥ ३४॥ जा
 ईमीलेकोईहंसतांहीतव॥ अतीअवीलोकउ
 मंगे॥ करीतमेलापलेतआपनेउरा॥ चंपीतह
 रससोरंगे॥ ३५॥ अहोधिंनतुमआईमी॥ लेसुज
 कलयकोटवीछहनके॥ सुक्रीतअंसहंसभव
 तारन॥ कारजकोटीकरनके॥ ३६॥ तेहीअंश
 तुमधामआजमोई॥ पीडपुनीतसेपाये॥ करी
 करीहेतहरसउरअंतर॥ बिरेबेरछतलाये॥ ३७॥
 नीजपतीआपनेकंठलगईत॥ अंसहेतधर
 ताईकोटीजुगनअनुकरमतपनतन॥ जावत

॥ अर्धे ॥

॥ ५५ ॥

तुरत बुझाई ॥ ३७ ॥ अतीसनमानलेतकरुणा
कर ॥ हंसहजुरगयेकु ॥ बाजंतरबुद्धवीवीधीम
तके ॥ तेहीसमसोसभयेकु ॥ ३८ ॥ जेतनेभर
आपतेधामतके ॥ उपमाकरनउष्णह ॥ तितने
मरतीनुतेहीसमयनमे ॥ कताकुलकरबाहे
४० ॥ हंसकुलाहलकरीतसमोहीत ॥ जेहीनी
जधामरहनके ॥ साहादरसहीतसकलसज
ननके ॥ अनुचीतकोउनताहंनके ॥ ४१ ॥ तादी
नअंशमीलेपंतीयंनकु ॥ उरहीतअंकलगा
ईतेहीदीनघरीसुरतसुखदनकी ॥ कहीन
जातमोईताई ॥ ४२ ॥ कोटीकोटीब्रह्मांडलोक
नके ॥ जेहीउपजावनहारा ॥ तीनकेमीलन
साहादसुखदनके ॥ कोकरीसकुसमारा ॥ ४३ ॥
३ ॥ अतीअपरंपपरपरमनेतीसुख ॥ मील
नापरमपतीनके ॥ नायपरंतुनहीनमोजम
ऊधजधरकीहुगतीनके ॥ ४४ ॥ पुनीपरमप
तीहेतसहीतकु ॥ लेतहीउरआपतेही ॥ सुध
सनमानसमोहहंसमील ॥ करीतसजातस
नेही ॥ ४५ ॥ परमउष्णहपरीतपुरीपुरन ॥ सक
लधामसजननके ॥ इतकेअनीतअंततमील
नसुखावीसरीतअतीवजननके ॥ ४६ ॥ सक

लसीधोतनपरपदपरसीध॥ छेवटसदनस
थायु॥ तीनसेनहीकोईपरमहेतुपत्त॥ रेहंन
अचलअद्यायु॥ ४७॥ अचलअद्यापधामके
धरता॥ करताकरनसकलको॥ ओरअवध
केथपीतअनीतपद॥ न्यायवीनायनकलके
४८॥ ज्वोसबनकीआघवीलोकीत॥ कुनर
हतकलपनमे॥ तेहीसकलअलपत्तअनी
तपद॥ थपीतजायजलपनमे॥ ४९॥ जबत्येअ
चलधामअवधीवीन॥ तीकरतारसदनही ज
करीतवासजहांअंशअचलहीत॥ चलीतन
कलपकदीनही॥ ५०॥ देखोअंशसकलभव
इतिके॥ पतीपरमकेधामु॥ अरेअचेतहेतन
हीउपजताकरनतांहीवीसरांमु॥ ५१॥ बेरबे
रयोकारकहतहं॥ सुनीयोबचनसारंमकु
मेरेसंघसधामसधावंन॥ फेरीमीलेनहीत
मकु॥ ५२॥ अबतुमकरीतवीचारदेखीत
वो॥ मेरेबयनवीलोकी॥ जोधरहोउरकीर
तअंतर॥ करीतवकीमतअलोकी॥ ५३॥ आ
वागवनहमारकलयमे॥ एकहीबेरबनेही
बोहोरुनआवनजुगनजुगनमे॥ सुनीयो
सजनसबेही॥ ५४॥ माटेबापबेरनहीआव

॥सर्वे॥

॥५६॥

त॥समग्रोएहकबेहुं॥हमेरेसंघसधामसधा
वत॥बनेतोबनेनबहु॥५५॥एहीबचनमेहे
रबांनछेवटके॥आगेकरीतकहनके॥सही
तसमोहग्रहोजेहीघटमे॥जीतुनीजधांमज
हनके॥५६॥जोसंघबनेनहीआवनअव॥म
लमरोभवभरमी॥अबकीकहीउरनहीध
रहीत॥तोतुमअधमअधरमी॥५७॥अबहं
मथकेकहीतसबयंनकु॥आवसहीतनर
णेही॥बावजगईअबाजहमतकी॥धरीतन
कोबुकरणेही॥५८॥ओरुकोईकोईजनधरे
हसेपण॥तंनमंतमंदवीकारु॥सुरवीरही
ईखडकरवेचके॥जगेनहीरुकरुकारु॥५९॥
गाजकारहोईजगेवीनानही॥हमेरीपुवपु
रनकुं॥हवेनहीमनभरमेरेउर॥जतिरहत
रुनकु॥६०॥एतोकहीलोकीतलाचारज॥हं
मतीअभेअटलही॥कामक्रोधमोहादीकम
दसे॥रुहसदायअमलही॥६१॥हारबचनहंम
कीयेआगमसे॥तवपणहोयउचरना॥अहो
जीवतुमकाजरखतहुं॥लाजआवनकीसर
ना॥६२॥इतीश्रीत्रयोदशोअंगसंपुर्ण॥१३॥हंमकु
पीयेलगततुमअंशु॥एहीभवजलतारनकु

तेसेहीहंमलागेतुमकुजव॥बिरनभवपारन
 कु॥१॥तबतेवारंमवारदेतसीख॥सुतकुवा
 पकहीनके॥तोहीयजीवनकुटलाईनजाव
 त॥जोययेपईतअहीनके॥२॥कहीजुगनवी
 छरनपतीयंनसे॥जोधरोभावमीलेनकु
 तोतुमकमरकसोआवनकी॥छेवटकीयो
 सजनकु॥३॥कमरकसनकेवसनवास्तवी
 क॥सुनीयो कहतसजनही॥आगमपेजप
 सावनकारन॥करीतवकमरवजनही॥४॥
 दोपटाज्ञानगतीकरतानीज॥कहीजेहीक
 मरवजनके॥पटकातीवुत्यागतारीपकेका
 ठीकोअसजनके॥५॥एहीपरकारसाजस
 जननके॥जेहीजनजुगधरमांही॥तेहीवस
 नलायकनीजपदके॥वहीतवीटलकुनाही
 ६॥जेहीजेतनीगमकहनहुतीते॥कहीसक
 लवीधीसोई॥भीनभीनकरीकेसमऊई
 त॥बाकीरखीनकोई॥७॥जेहीनीजसंतुहेत
 धामनके॥तीनेलीयेउरमांनी॥कोईकको
 ईकनहीरहतसनीतमे॥तीनकुदेतजवरानी
 ८॥ओरसकलसबसंतसीरोमणी॥जेहील
 हतममगतीयां॥नीजपतीपरमयासरह

अंके

॥५७

ननके। जीनुमतरवउतपतीयो॥ ८॥ जेहीम
तलवआयेहंमभवमे॥ पतीपरमपठवाये॥ ते
हीमतरवकेलहनसंतजे॥ सोहंमसेरतला
ये॥ १०॥ संतएकरमतारतीविंतु॥ आइचढेअ
नुचीतही॥ रामदासजीनुनांमसगुनघन
साचेसुमनसुमीतही॥ ११॥ तीजकेसंतशी
रोमणीतेहीसम॥ पांगेपीत्यपरमही॥ मेरेआ
गमअलोकीतअनुभव॥ सुणताभयेआस
मही॥ १२॥ पीछेकरीतवरखोजग्रंथकी॥ रमली
करलीतसकलमे॥ पायेमरमपुरातंतपत
के॥ समकेकलीतवीकलमे॥ १३॥ वारपारउ
तइतकीकलीतव॥ मलीतवरखेसीधांते॥
ओरसकलसबकरीतउयापंत॥ जेहीनर
हनगतअंते॥ १४॥ पुगटेज्ञानजगेककुकारं
न॥ इतकेअनीतनसाई॥ दीव्यनेनउघटेडु
रहीतके॥ जीनयेसबदरसाई॥ १५॥ सारअ
सारसकलकोदेखीत॥ पेपीतपरखकरेह
सकलयंथकीपारहमनकुं॥ नरखीतसर
नपरेह॥ १६॥ हेतपीतसहीतमहंमसेचीत॥
लग्गोननेकवीछरही॥ एहीपरकारदेखअधी
कारंत॥ तबहमनेउरधरही॥ १७॥ जबहंमखी

ये उरधर अंतर ॥ बरही तबोध करे ह ॥ दीनो मं
 त्रमाहाद करन न मे ॥ जीने सब काज सर रे ह
 १८ ॥ हली मली हेत सकल संतन ॥ रहे सदा
 मम सरना ॥ चली तन चंत तंत दे स्वीत भव
 होय रहे अस रत सरना ॥ १९ ॥ बो हो रु समो
 ह संतर स्वी सन मुख ॥ कही करुणाय करी
 नके ॥ तुम हंम जो गमी लन एही अवसर ॥
 पुनीत पाय फरी नके ॥ २० ॥ अब हंम तब तव
 धाम जावं नके ॥ पती परम की पासु ॥ तब ते आ
 गम कही त सुना इति ॥ परमीत करीत प्रका
 शु ॥ २१ ॥ पती परम की पास रहनके ॥ सुख द
 समो ह पावं नके ॥ ताही त मन कुले ई मे ला इति
 जो जन होय आवनके ॥ २२ ॥ इती आ चतुर्दशो
 अंग संपूर्ण १४ ॥ जेही तारीप के धाम पती नके ॥
 बरन न बनीत कहे ह ॥ जो साहर के नीर अप
 रमीत ॥ ची डीया चंच भरे ह ॥ १ ॥ जल नीधी वत
 अपरम ची डीयं नकु ॥ तौ अवरणी पती धां सु
 एसे ही अपरम सुख धाम नमे ॥ क्यौं न करत
 जन हां सु ॥ २ ॥ सुख की सीर स्त्री मावी न सदप
 दा करन वास अटलेतु ॥ अरे अरे हाय हाय तु
 मन कु ॥ क्यौं न हवीत उर हेतु ॥ ३ ॥ हंम तो स्वाद

से

॥ अंके

॥ ५८

खीयेतेहीसुखके॥ तबयेकहीततमनकु॥ ५८
छिनरखीचेतावंनतंमकु॥ तबनहीदोशहंम
नकु॥ ५९॥ दुसरीवेरकहनकीकहीतम॥ अब
तुमेरीतुमजांनो॥ तुमकुसीखसमऊणकी
देवत॥ तेतोपुरनअघानो॥ ५९॥ जेहीसंतओरु
सजनसमेतु॥ पतीपरमकेप्यारा॥ तेहीरहीए
कतारहमनसे॥ जीतुपरननभवपारा॥ ६०॥ मे
रेवचनप्रतीतलायके॥ तीरमेरहोनीचंतु॥
मायाकालकरालकरपके॥ डरपनहीतुमये
तु॥ ६१॥ नीजकरतारसकलकेकारन॥ जीतुहं
मअंशवीशेशु॥ तेहीहंमअभयेअवनपरतन
धरा॥ करनकाजउपदेशु॥ ६२॥ लेईनीजसधर
प्रमानगीपतकी॥ सुगतीयारपुनीपाईतार
नतरनसकलभवजनकु॥ सकेनकोउअट
काई॥ ६३॥ राजकुवोरपाटनपतकेनीज॥ कोउ
तुहकंसउगावे॥ मेतोअसंखलोकपतीपीतुसु
त॥ केतीकफरककहावे॥ ६४॥ एतेहीफेरफर
ककेहंसही॥ महाअंसमऊभूता॥ तोमेरीकही
कुनउगावत॥ भवभरअमलअधुता॥ ६५॥ तब
तोमेरेहकंसउगावत॥ कुनरहेभवभरमे॥ अ
मलबीनागमज्ञानआचारज॥ स्वयेसकलस

रभरमे ॥ १२ ॥ सरभरसोहीसीमंतरंकसंम ॥ रा
 जुहकंमकेदोई ॥ ताडकरनओरुडंडुदेवंनमे
 अधीकलुंन्यकीनुकोई ॥ १३ ॥ बुंसावीसनमा
 हेसईशलो ॥ ओरुअवतारसमेतु ॥ नीजपतीके
 नीजुहकंमवीनाके ॥ एसबसरखसखेतु ॥ १४ ॥
 इतमेहकमलेईहजरतके ॥ कुनआयेभवभर
 मे ॥ आफआपतीईश्वरीयंनकुसब ॥ सुगत
 गयेभवसरमे ॥ १५ ॥ कुनेतदेईकरतारपरम
 की ॥ जीवकीसीखतरननकी ॥ नीजतनके
 समरनकरवावीत ॥ कीनीसुगतमरनकी
 ॥ १६ ॥ जोकदपीकोईनेकहीहोयतो ॥ गतीपर
 मपतकेरी ॥ तोतीतुलसलखाईतकहोमम
 क्याहांउपजेकेईवैरी ॥ १७ ॥ बुंलुजोतनीरगुण
 गुणथपीतव ॥ एहीउपासनसबकी ॥ सकलम
 एकतांहांवीलमाईत ॥ अवनीरचीजाजबकी
 १८ ॥ जबतेनीजपतीहुकंमलेईतके ॥ सुगतीया
 रसुगतनके ॥ तनधरतदीपआयेहंमहीभव
 काजकरनजगतनके ॥ १९ ॥ एहीपरकारनके
 सोमृतहंम ॥ अतहीत्यावनरणीतके ॥ ओरहं
 कंमसहीतमपतीयंनके ॥ कंमनहीकोउबरणी
 तके ॥ २० ॥ एसेहीपुरुषहमनसेतुमकी ॥ कौन

॥ अंदे ॥

॥ ५६ ॥

होयसुगतेरी ॥ अहोअहोधंनधंनजीवंनतुस
भईसतसंघहमेरी ॥ २१ ॥ एततेदीनअतुहुतअ
स्थके साबोलहुतेसतमही ॥ बीतुवेरागत्या
गतततयसे ॥ खावतकालखतमही ॥ २२ ॥ तो
आभवतजकीयेहुकामक्या ॥ भगवाभेखुध
रीनके आवागवनतमीटीमरनकी ॥ भव
जलफेरफरीनके ॥ २३ ॥ तेतोलखीतवहुती
लेघाटन ॥ सुखसंसारसराये ॥ कुनरहीअ
रचीतअतुभवकी ॥ अधीकमफरकफराये
२४ ॥ जोअबकीहंसकुनहीउपजत ॥ अतुन
वअगमवीचारे ॥ तोतुमजावतकलीकेभेख
लगभेडकीलाहारकतारे ॥ २५ ॥ भायगवंततु
मसुनहीजुगमे ॥ लोकचतुरदशमाही ॥ तेहीस
रतुलमुलमापकमे ॥ आवततहीकीतुकाही
२६ ॥ अबजेहीबोधकरनमेतुमकु ॥ बाकीरखी
नबापु ॥ जरुराजरुरपरमपदयाईत ॥ जेहीघ
रआघअघापु ॥ २७ ॥ पणरेहेणीकरणीसे
पावन ॥ तेहीतोहाथतुमारे ॥ मेरेतरपनकी
तुमयनकु ॥ सबवीधीकहीसकारे ॥ २८ ॥ ज
तमतकहीतुमकुहमजेहीजन ॥ तीबुत्याग
कीआगु ॥ तेहीकीतेहीरखातनतजलग ॥

तितुमहीबडभागु॥२८॥ओरुतुमकुनीजप
 दपावंनकी॥तीरमेकहीजरुरी॥तोतुमकु
 कहीपथपालनमे॥मतकोईधरोसबुरी॥
 ३०॥जोसेवैददेतओरवदकु॥चरीवीनरो
 गनजाई॥हंमेवेदकभवडुखदरदके॥पथवी
 लुपदनहीपाई॥३१॥अबमेध्यानकरतनी
 जपदके॥तुमेरीहेरनहेरु॥कुलकरतारस्य
 कलकेकारन॥तांहांलगवीचीतमेरु॥३२॥
 नीजपतीसेगतकरीएकतारन॥समदस
 सुरतधरीनके॥कोठीवीघनअगणीतआ
 ब्रुणसे॥पतीतजजोउनफरीनके॥३३॥आ
 ब्रुणवीघनवीक्षेपकरनके॥जांहांलगीत
 वकतरसना॥तेहीसकलकुमेटकरीतज
 प॥तजीहरसरसरसना॥३४॥तोतीनकु
 क्पाकरीतवीघनके॥लालचसकलनसा
 ईगयाजीवमडदालमनुसकु॥जोत्येकाल
 नखाई॥३५॥सकलसाजसुखसहीतसम
 रधि॥छतेतजीततदवतही॥उदेअस्तकेन
 रनरपतसुख॥लहतनजोससोपतही॥३
 ६॥एहीपरकारकरीतजाग्रतमे॥परहरीपा
 ससकलही॥नीशखंबथेनरतनीरंतर॥

श्रद्धे

॥६०

अवीगतकीगतकरही ॥३७॥ देवोएहीप्रसता
यहमनकी ॥ जेहीनबनेकोउकुनसे ॥ छतेखल
कवीनुखलकरहनकी ॥ जेहीपलपगुपतीयं
नसे ॥३८॥ यावीधीअलगरहीतवीकल्पसे
सुरतनीरतअनुरगही ॥ राखीरहतजतमतज
गतनसे ॥ धरीतध्यानतबलगही ॥३९॥ एसेही
लखररवीततनतजलग ॥ बोहीरुपतीतपेजा
बु ॥ केहंकुवेरकल्पपरजंतही ॥ फेरीतइतसेजा
बु ॥४०॥ सुखकेसागरमाहीरुकोल ॥ करुकरु
एगनीधजांही ॥ केहंकुवेरकल्पतसुखकार
ना ॥ इतआवनकजकाही ॥४१॥ इतीश्रीपंचदश
अंगसमाप्तः ॥ १५॥ इतीश्रीअहेताहेतनर
विद्वंतामणीग्रंथसंपूर्णः ॥